कवितावलीरामायण



श्रीगणेशाय नमः

तुलसीकृत

कवितावली रामायण

अथ बालकांडप्रारंभ

सवैया

अवधेश के द्वारे सकारे गई सुत गोद कै भूपति लै निकसे ।
अवलोकिहौं सोचविमोचन को ठगि सी रही जो न ठगे धिकसे ।।
तुलसी मन रञ्जन रञ्जित अञ्जन नैन सुखञ्जन जातकसे ।
सजनी शशि में समशील उभै नवनीलसरोरुह से बिकसे १
पगनूपुर औ पहुँची करकञ्जनि मञ्जु बनी मणिमाल हिये ।
नवनील कलेवर पीत झँगा झलकैं पुलकैं नृप गोद लिये ।।
अरविन्द सों आनन रूपमरन्द अनन्दित लोचन भृंग पिये ।
मनमों न वस्यो अस बालक जो तुलसी जग में फल कौन जिये २
तन की द्युति श्याम सरोरुह लोचन कञ्ज की मञ्जुलताई हरैं ।
अति सुन्दर शोभित धूरिभरे छबि भूरि अनङ्ग कि दूरि धरैं ।।
दमकैं दँतियाँ द्युति दामिनि ज्यों किलकैं कल बालबिनोद करैं ।
अवधेश के बालक चारि सदा तुलसी मनमन्दिर में बिहरैं ३

कबहूँ शशि माँगत आरि करैं कबहूँ प्रतिबिम्ब निहारि डरैं।
कबहूँ करताल बजाइ कै नाचत मातु सबै मनमोद भरैं॥
कबहूँ रिसिआइ रहैं हठिकै पुनि लेत सोई ज्यहि लागि अरैं।
अवधेश के बालक चारि सदा तुलसी मनमन्दिर में बिहरैं ४
बरदन्त की पङ्गति कुन्दकली अधराधर पल्लव खोलन की।
चपला चमकै घनबीच जगै छबि मोतिन माल अमोलन की॥
घुँघुरारि लटैं लटकैं मुख ऊपर कुंडल लोल कपोलन की।
निवछावरि प्राण करै तुलसी बलि जाउँ लला इन बोलन की ५
पदकञ्जनि मञ्जु बनी पनहीं धनुहीं शर पङ्कजपाणि लिये।
लरिका सँग खेलत डोलत हैं सरयूतट चौहट हाट हिये॥
तुलसी अस बालक सों नहिं नेह कहा जप योग समाधि किये।
नर वे खर शूकर श्वान समान कहौ जग में फल कौन जिये ६
सरयू बर तीरहि तीर फिरैं रघुबीर सखा अरु बीर सबै।
धनुहीं कर तीर निषङ्ग कसे कटिपीत दुकूल नवीन फबै॥
तुलसी तेहि अवसर लावनिता दश चारि नौ तीन इकीस सबै।
मति भारति पंगु भई जो निहारि बिचारि फिरी उपमा न फबै ७

घनाक्षरी

क्षोणी में के क्षोणीपाति छाजै जिन्हैं छत्र छाया क्षोणी क्षोणी छाये क्षिति आये निमिराज के। प्रबल प्रचण्ड बरिबण्ड बरबेष बपु बरिबे को बोले बयदेही बर काज के। बोले बन्दी बिरुद बजाइ बर बाजनेऊ बाजे बाजे बीर बाहु

धुनत समाज के। तुलसी मुदित मन पुर नर नारि जेते बारबार हेरैं मुख औधमृगराज के ८ सीय के स्वयम्बर समाज जहाँ राजन को राजनि के राजा महाराजा जानै नाम को। पवन पुरन्दर कृशानु भानु धनद से गुण के निधान रूप धाम शोभा काम को॥ बान बलवान यातुधानप सरीखे शूर जिनके गुमान सदा सालिम संग्राम को। तहाँ दशरत्थ के समर्थ नाथ तुलसी के चपरि चढ़ायो चाप चन्द्रमा ललाम को ९ मयनमहन पुरदहन गहन जानि आनिकै सबै को सार धनुष गढ़ायो है। जनक सदसि जेते भले भले भूमिपाल किये बलहीन बल आपनो बढ़ायो है॥ कुलिश कठोर कूर्म पीठि ते कठिन अति हठि न पिनाक काहू चपरि चढ़ायो है। तुलसी सो राम के सरोजपाणि परशत टूट्यो मानो बारेते पुरारि ही पढ़ायो है १०

छप्पय

डिगति उर्व्वि अति गुर्व्वि सर्व्व पर्व्वे समुद्र सर।
ब्याल बधिर तेहि काल बिकल दिगपाल चराचर॥
दिगगयन्द लरखरत परत दशकन्ध मुखरभर।
सुरबिमान हिमभानु भानु संघटित परस्पर॥
चौंके बिरञ्चि शंकर सहित कोल कमठ अहि कलमल्यो।
ब्रह्मण्ड खण्ड किधौं चण्डध्वनि जबहिं राम शिवधनु दल्यो ११

घनाक्षरी

लोचनाभिराम घनश्याम राम रूप शिशु सखी कहै सखी सों तू प्रेमपय पालिरी। बालक नृपालजू के ख्याल ही पिनाक तोर्यो मण्डलीक मण्डली प्रतापदाप दालिरी॥ जनक को सिया को हमारो तेरो तुलसी को सबको भावतो ह्वैहै मैं जो कह्यो कालिरी। कौशला की कोषि परतोषि तन वारियेरी राय दशरत्थ की बलैया लीजै आलिरी १२ दूब दधि रोचन कनकथार भरि भरि आरती सँवारि बरनारि चलीं गावतीं। लीन्हें जयमाल करकञ्ज सोहैं जानकी के पहिरावो राघौजी को सखियाँ सिखावतीं। तुलसी मुदित मन जनकनगर जन झाँकतीं झरोखे लागीं शोभा रानी पावतीं। मानहुँ चकोरी चारु बैठीं निज निज नीड चन्द की किरण पीवैं पलकौ न लावतीं १३ नगर निशान बर बाजैं ब्योम दुन्दुभी बिमान चढ़ि गान कै कै सुरनारि नाचहीं। जैति जैति तिहूँपुर जयमाल राम उर बरषैं सुमन सुर रूरे रूप राचहीं॥ जनक को पनजयो सबको भावतो भयो तुलसी मुदित रोम रोम मोद माचहीं। साँवरो किशोर गोरी शोभा पर तृण तोरी जोरी जियो युग युग युवती सुयाचहीं १४ भले भूप कहत भले भदेस भूपनि सों लोक

लखि बोलिय पुनीत रीति मारषी । जगदंबा जानकी जगत
पितु रामभद्र जानि जिय जोहौ जो लगै न मुँह कारषी ॥
देखे हैं अनेक ब्याह सुने हैं पुराण बेद बूझे हैं सुजान साधु
नरनारि पारषी । ऐसे सम समधी समाज न बिराजमान
रामसे न बर दुलही न सिय सारषी १५ बाणी बिधि गौरी
हर शेषहूँ गणेश कही सही भरी लोमश भुशुंडि बहु बारिषो ।
चारिदश भुवन निहारि नरनारि सब नारद को परदा न
नारद सों पारिषो ॥ तिन्ह कही जग में जगमगाति जोरी
एक दूजी को कहैया को सुनैया चष चारिषो । रमा रमा-
रमण सुजान हनुमान कही सीय सी न तीय न पुरुष राम
सारिषो १६

सवैया

दूलह श्रीरघुनाथ बने दुलही सिय सुन्दर मन्दिर माहीं ।
गावति गीत सबै मिलि सुन्दरि बेद जुवा जुरि बिप्र पढ़ाहीं ॥
राम को रूप निहारति जानकि कंकण के नग की परछाहीं ।
याते सबै सुधि भूलि गई कर टेकि रही पल टारति नाहीं १७

घनाक्षरी

भूपमंडली प्रचंडचंडीश को दंड खंड्यो चंडबाहुदंड जाको
ताही सों कहत हौं । काठिन कुठारधार धरिबे की धीरताहि

बीरता बिदित ताकी देखिये चहत हौं । तुलसी समाजराज ताजि सो बिराजे आज गाज्यो मृगराज गजराज ज्यों गहत हौं। छोणी मैं न छाँड़चो छप्यो छोणिपको छोनाछोटोछोणिप छपन त्राको बिरुद बहत हौं १८ निपटि निडरि बोले बचन कुठारपाणि मानी त्रास औनिपन मानो मौनता गही । रोष माखे लषण अकनि अनखोहीं बातैं तुलसी बिनीत बाणी बिहँसि ऐसी कही । सुयश तिहारे भरे भुवननि भृगुनाथ प्रकट प्रताप आप कह्यो सो सबै सही । टूट्यो सो न जुरैगो शरासन महेशजू को रावरी पिनाक मैं सरीकता कहाँ रही १९

सवैया

गर्भ के अर्भक काटन को पटु धार कुठार कराल है जाको ।
सोई हौं बूझत राजसभा धनु कै दलिहै दलिहौं बल ताको ॥
लघुआनन उत्तर देत बड़े लरिहै मरिहै करिहै कछु शाको ।
गोरो गरूर गुमान भरचो कहु कौशिक छोटो सो ढोटो है काको २०

घनाक्षरी

मख राखिबे के काज राजा मेरे संग दये दले यातुधान जे जितैया बिबुधेश के । गौतम की तीय तारी मेटे अघ भूरि भारी लोचन अतिथि भये जनक जनेश के ॥ चंड-

बाहुदंड बल चंडीश कोदंड खंड्यो ब्याही जानकी जीते
नरेश देश देश के। साँवरे गोरे शरीर धीर महाबीर दोऊ
नाम राम लषण कुमार कोशलेश के २१

सवैया।

काल कराल नृपालन के धनुभंग सुने फरसा लिये धाये।
लछमण राम बिलोकि सप्रेम महारिसिहा फिरि आँखि दिखाये॥
धीर शिरोमणि बीर बड़े बिनयी बिजयी रघुनाथ सोहाये।
लायक हैं भृगुनायक से धनुशायक सौंपि सुभाय सिधाये २२

इति बालकांड समाप्त

अथ अयोध्याकांड प्रारंभ

सवैया।

कीर के कागर ज्यों नृप चीर बिभूषण उप्पम अंगनि पाई।
औध तजी मगवास के रूख ज्यों पंथ के साथ ज्यों लोग लुगाई॥
संग सुबंधु पुनीत प्रिया मानो धर्मक्रिया धरि देह सुहाई।
राजिवलोचन राम चले तजि बाप का राज बटाऊ की नाईं १
कागर कीर ज्यों भूषण चीर शरीर लस्यो तजि नीर ज्यों काई।
मातु पिता प्रिय लोग सबै सनमानि सुभाय सनेह सगाई॥
संग सुभामिनि भाइ भले दिन द्वै जनु औधहु ते पहुनाई।
राजिवलोचन राम चले तजि बाप को राज बटाऊ की नाईं २

घनाक्षरी

शिथिल सनेह कहैं कौशिला सुमित्राजी सों मैं न लखी सौति सखी भगिनी ज्यों सेई है। कहैं मोहिं मैया कहौं मैं न मैया भरतकी बलैया लैहौं भैया तेरी मैया कैकेई है॥ तुलसी सरलभाय रघुराय माय मानी काय मन बानीहू न जानिकै मतेई है। बाम बिधि मेरो सुख सिरस सुमनसम ताको छल छुरी कोह कुलिश लै टेई है ३ कीजै कहा जीजीजू सुमित्रा परिपाँय कहैं तुलसी सहावै बिधि सोई सहियतु है। रावरे सुभाय रामजन्म ही ते जानियत भरत की मातु केरो कीबो सोचियतु है॥ जाई राजघर ब्याह आई राजघर महाराज पूत पायेहू न सुख लहियतु है। देह सुधागेह तेऊ मृगहू मलीन कियो ताहू पर बाहु बिन राहु गहियतु है ४

सवैया

जासु के नाम अजामिल से खल कोटि नदी भव बूड़त काढ़े।
जो सुमिरे रज मेरु शिलाकन होत अजाखुर बारिधि बाढ़े॥
तुलसी जिमके पदपङ्कज ते प्रकटी तटनी जो हरै अघ गाढ़े।
ते प्रभु या सरिता तरिबे कहँ माँगत नाव करारे ह्वै ठाढ़े ५
यहि घाटते थोरिक दूरि अहै कटिलौं जल थाह देखाइहौं जू।
परसै पगधूरि तर तरनी घरनी घर का समुझाइहौं जू॥
तुलसी अवलम्ब न और कछू लरिका केहि भाँति जियाइहौं जू।

वरु मारिये मोहिं बिना पग धोये हौं नाथ न नाव चढ़ाइहौं जू ६
रावरो दोष न पाँयन को पगधूरि को भूरि प्रभाव महा है।
पाहन ते बनबाहन काठ को कोमल है जल खाइ रहा है॥
पाँवन पाँय पखारिकै नाव चढ़ाइहौं आयसु होत कहा है।
तुलसी सुनि केवट के बरबैन हँसे प्रभु जानकि ओर हहा है ७

घनाक्षरी

पातभरी सहरि सकल सुत बारे बारे केवट की जाति कछु बेद न पढ़ाइहौं। सब परिवार मेरो याही लागि राजा जी हौं दीन बित्तहीन कैसे दूसरी गढ़ाइहौं। गौतम की घरनी ज्यों तरनी तरैगी मेरी प्रभु सों निषाद ह्वैकै बाद न बढ़ाइहौं। तुलसी के ईश राम रावरे सों साँची कहौं बिना पग धोये नाथ नाव न चढ़ाइहौं ८ जिनको पुनीत बारि शिरसि बहैं पुरारि त्रिपथगामिनी यश बेद कहैं गाइकै। जिनको योगीन्द्र मुनिबृन्द देव देह धरि करत बिबिध योग जप मन लाइकै॥ तुलसी परशि धूरि जिनकी अहल्या तरी गौतम सिधारे गृह गौनो सो लेवाइकै। तेई पाँय पायकै चढ़ाय नाव धोये बिनु ख्वैहौं न पठावनी कै ह्वैहौं न हँसाइकै ९ प्रभुरुख पायकै बुलाय बाल घरनी को बन्दिकै चरण चहुँदिशि बैठे घेरि घेरि। छोटो सो कठौता

भरि आनि पानी गङ्गाजू को धोइ पाँय पियत पुनीत बारि फेरि फेरि ॥ तुलसी सराहैं ताको भाग सानुराग सुर बरषैं सुमन जय जय कहैं टेरि टेरि । बिबुध सनेहसानी बानी असयानी सुनि हँसे राघौ जानकी लषनतन हेरि हेरि १०

सवैया।

पुर ते निकसी रघुबीर बधू धरि धीर दये मग में डग द्वै ।
झलकीं भरि भाल कनी जल की पट सूखि गये मधुराधर वै ॥
फिरि बूझति है चलनोब कितो पिय पर्णकुटी करिहौ कित वै ।
तियकी लखि आतुरता पियकी अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै ११
जल को गये लक्ष्मण हैं लरिका परिखौ पियछाँह घरीक है ठाढ़े ।
पोंछि पसेउ बयारि करौं अरु पाँय पखारिहौं भूभुरि डाढ़े ॥
तुलसी रघुबीर प्रिया श्रम जानिकै बैठि बिलम्ब सों कंटक काढ़े ।
जानकीनाह को नेह लख्यो पुलको तन बारि बिलोचन बाढ़े १२
ठाढ़े हैं नौद्रुम डार गहे धनु काँधे धरे कर शायक लै ।
बिकटी भृकुटी बड़री अँखियाँ अनमोल कपोलन की छबि है ॥
तुलसी अस मूरति आनि हिये जड़डारुधौं प्राण निछावरिकै ।
श्रम सीकर साँवरि देह लसै मानो राशि महातम तारकमै १३

घनाक्षरी

जलजनयन जलजानन जटा हैं शिर यौवन उमंग अंग उदित उदार हैं । साँवरे गोरे के बीच भामिनी सुदामिनी

सी मुनिपट धारे उर फूलनि के हार हैं ॥ करनि शरासन शिलीमुख निषङ्ग कटि अतिही अनूप काहू भूप के कुमार हैं। तुलसी बिलोकिकै तिलोक के तिलक तीनि रहैं नर-नारि ज्यों चितेरे चित्रसार हैं १४ आगे सोहै साँवरो कुँवर गोरो पाछे आछे काछे मुनिवेष धरे लाजत अनंग हैं। बान बिशिखासन बसन बन ही के कटि कसे हैं बनाइ नीके राजत निषंग हैं ॥ साथ निशिनाथमुखी पाथनाथनन्दिनी सी तुलसी बिलोके चित लाइ लेत संग हैं। आनँद उमंग मन यौवन उमंग तन रूप के उमंग उमँगत अंग अंग हैं १५ सुन्दर बदन सरसीरुह सुहाये नैन मंजुल प्रसून माथे मुकुट जटनि के। अंसनि शरासन लसत शुचि शर कर तूण कटि मुनिपट लूटक-पटनि के ॥ नारि सुकुमारि संग जाके अंग उबटिकै बिधि बिरच्यो बरूथ बिद्युत छटनि के। गोरे को बरन देखे सोनो न सलोनो लागे साँवरे बिलोके गर्ब्ब घटत घटनि के १६ बल्कल बसन धनु बाण पाणि तूण कटि रूप के निधान घनदामिनी बरण हैं। तुलसी सुतीय संग सहज सोहाये अंग नवल कमल हू ते कोमल चरण हैं ॥ औरै सो बसंत औरै रति औरै रतिपति मूरति बिलोके तन-मन के हरण हैं। तापस बनाये बेष

पथिक सोहाये पन्थ चले लोकलोचननि सुफल करण हैं १७

सवैया

वनिता बनि श्यामल गौर के बीच बिलोकहु री सखि मोहिसी ह्वै।
मगयोग न कोमल क्यों चलिहै सकुचाति मही पदपङ्कज छ्वै॥
तुलसी सुनि ग्रामवधू बिथकीं पुलकीं तन औ चले लोचन च्वै।
सब भाँति मनोहर मोहन रूप अनूप हैं भूप के बालक द्वै १८
साँवरे गोरे सलोने सुभाय मनोहरता जिति मैन लियो है।
बान कमान निषङ्ग कसे शिर सोहैं जटा मुनि बेष कियो है॥
संग लिये विधु बैनी बधू रति को जिन रञ्चक रूप दियो है।
पाँयन तो पनहीं न पयादेहि क्यों चलिहैं सकुचात हियो है १९
रानी मैं जानी अयानी महा पबि पाहनहू ते कठोर हियो है।
राजहु काज अकाज न जान्यो कह्यो तिय को जेहि कान कियो है॥
ऐसी मनोहर मूरति ये बिछुरे कस प्रीतम लोग जियो है।
आँखिन में सखि राखिबे योग इन्हें किमिकै बनवास दियो है २०
शीशजटा उरबाहु बिशाल बिलोचन लाल तिरीछीसी भौहैं।
तूण शरासन बाण धरे तुलसी बनमारग में सुठि सोहैं॥
सादर बारहिबार सुभाय चितै तुम्हरो हमरो मन मोहैं।
पूँछत ग्रामवधू सिय सों कहु साँवरे से सखि रावरे को हैं २१
सुनि सुंदरि बानि सुधारससानि सयानिहै जानकी जानि भली।

तिरछे करि नैन दै सैन तिन्हें समुझाइ कछू मुसकाइ चलीं ॥
तुलसी तेहि औसर सोहैं सबै अवलोकति लोचन लाहु अली ।
अनुराग तड़ाग में भानु उदै बिकसी मनो मंजुल कंजकली २२
धरि धीर कहैं चलु देखिय जाय जहाँ सजनी रजनी रहिहैं ।
कहिहैं जग पोच न सोच कछू फल लोचन आपनतौ लहिहैं ॥
सुख पाइहैं कान सुने बतियाँ कल आपुस में कछु पै कहिहैं ।
तुलसी अति प्रेम लगी पलकैं पुलकी लखि राम हिये महिहैं २३
पद कोमल श्यामल गौर कलेवर राजत कोटि मनोज लजाये ।
करबाण शरासन शीशजटा सरसीरुहलोचन सोन सोहाये ॥
जिन देखे सखी सतभावहु ते तुलसी तिन तौ मन फेरि न पाये ।
यहि मारग आजु किशोर बधू बिधुबैनि समेत सुभाय सिधाये २४
मुखपंकज कंज विलोचन मंजु मनोज शरासनसीं बनि भोहैं ।
कमनीय कलेवर कोमल श्यामल गौर किशोर जटा शिर सोहैं ॥
तुलसी कटितूण धरे धनु बाण अचानक दृष्टि परी तिरछोहैं ।
केहि भाँति कहौं सजनी तोहिसों मृदु मूरति द्वै निवसी मन मोहैं २५
प्रेम सों पीछे तिरीछे प्रियाहि चितै चितु दै चले लै चित चोरै ।
श्यामशरीर पसेउ लसै हुलसै तुलसी लखिसो मन मोरै ॥
लोचन लोल चलैं भृकुटी कलकाम कमानहु सों तृण तोरै ।
राजत राम कुरंग के संग निषंग कसे धनु सों शर जोरै २६
शर चारिक चारु बनाइ कसे कटिपाणि शरासन शायक लै ।
बन खेलत राम फिरैं मृगया तुलसी छवि सो बरणै किमि कै ॥

अवलोकि अलौकिक रूप मृगी मृग चौंकि चकै चितवै चित दै।
न डगै न भगै जिय जानि शिलीमुख पंच धरे रतिनायक है २७
बिन्ध्य के वासी उदासी तपोव्रतधारी महा बिनु नारि दुखारे।
गौतमतीय तरी तुलसी सो कथा सुनिभे मुनिवृन्द सुखारे॥
ह्वैहैं शिला सब चन्द्रमुखी परसे पद मंजुल कंज तिहारे।
कीन्ही भली रघुनायकजू करुणा करि कानन को पगु धारे २८

इति अयोध्याकांड समाप्त॥ २॥

अथ आरण्यकांड प्रारंभ

सवैया।

पंचवटी बर पर्णकुटीतर बैठे हैं राम सुभाय सोहाये।
सोहैं प्रिया प्रिय बन्धु लसै तुलसी सब अंग घने छबि छाये॥
देखि मृगा मृगनैनी कहै प्रिय बैनते प्रीतम के मन भाये।
हेमकुरंग के संग शरासन शायक लै रघुनायक धाये १

इति आरण्यकांड समाप्त। ३।

अथ किष्किन्धाकांड प्रारंभ

घनाक्षरी

जब अंगदादिन की मतिगति मन्द भई पवन के पूत को न कूदिबे को पलुगो। साहसी ह्वै शैल पर सहसा सकेलि

आइ चितवत चहुँ ओर औरन को कलुगो ॥ तुलसी रसातल को निकसि सलिल आयो कोल कलमल्यो अहिकमठ को बलुगो । चारिहू चरण के चपेट चापे चिपटिगो उचकि उचकि चारि अंगुल अचलुगो १

इति किष्किन्धाकांड समाप्त । ४ ।

अथ सुन्दरकांड प्रारंभ

घनाक्षरी

बासव बरुण बिधि बन ते सुहावनो दशानन को कानन बसन्त को सिंगारसो । समय पुराने पात परत डरत बात पालत लालत रतिमार को बिहार सो ॥ देखे बर बापिका तड़ाग बाग को बनाव रागबश भो बिरागी पवनकुमार सो । सीय की दशा बिलोकि बिटप अशोक तर तुलसी बिलोक्यो सो तिलोक शोकसारसो १ माली मेघमाल बनपाल बिकराल भट नीके सब काल सींचे सुधासार नीर को । मेघनाद ते दुलारो प्राण ते पियारो बाग अति अनुराग जिय यातुधान धीर को । तुलसी सो जानि सुनि सीय को दरश पाइ बैठो बाटिका बजाइ बल रघुबीर को । बिद्यमान देखत दशानन को कानन सो तहस नहस कियो

साहसी समीर को २ बसन बटोरि बोरि बोरि तेल तमीचर खोरि खोरि धाइ ग्राइ बाँधत लँगूर हैं। तैसो कपि कौतुकी डरात ढीले गात कै कै लात के ग्रघात सहै जी में कहै कूर हैं॥ बाल किलकारी कै कै तारी दै दै गारी देत पाछे लागे बाजत निशान ढोल तूर हैं। बालधी बढ़न लागि ठौर ठौर दीन्ही ग्रागि बिन्ध्य की दवारि कैधौं कोटिशत सूर हैं ३ लाइ लाइ ग्रागि भागे बाल जात जहाँ तहाँ लघु ह्वै निदुकि गिरि मेरु ते बिशाल भो। कौतुकी कपीश कूदि कनक कँगूरा चढ़्यो रावण भवन चढ़ि ठाढ़ो तेहि काल भो॥ तुलसी बिराज्यो ब्योम बालधी पसारी भारी देखे हहरात भट काल सो कराल भो। तेज को निधान मानो कोटिक कृशानु भानु नख बिकराल मुख तैसो रिसि लाल भो ४ बालधी बिशाल बिकराल ज्वालजाल मानो लङ्क लीलिबे को काल रसना पसारी है। कैधों ब्योम बीथिका भरे हैं भूरि धूमकेतु बीररस बीर तरवारि सी उघारी है॥ तुलसी सुरेशचाप कैधौं दामिनी कलाप कैधौं चली मेरु ते कृशानु सरि भारी है। देखैं यातुधान यातुधानी ग्रकुलानी कहैं कानन उजास्यो ग्रब नगर प्रजारी है ५ जहाँ जहाँ बुबुकि बिलोकि बुबुकारी देत जरत निकेत धावो धावो लागि

आगि रे। कहाँ तात मात भ्रात भगिनी भामिनी भाभी ढोटो छोटो छोहरा अभागे भोड़े भागि रे॥ हाथी छोरो घोड़ा छोरो महिष बृषभ छोरो छेरी छोरो सोवै सो जगावो जागि जागि रे। तुलसी बिलोकि अकुलानी यातुधानी कहैं बार बार कह्यो पिय कपि सों न लागि रे६ देखि ज्वालजाल हाहाकार दशकन्ध सुनि कह्यो धरो धरो धाये बीर बलवान हैं। लिये शूल शैल पाश परिघ प्रचण्ड दण्ड भाजन सनीर धीर धरे धनु बान हैं॥ तुलसी समिध सौंज लङ्क यज्ञकुण्ड लखि यातुधान पुङ्गीफल यव तिल धान हैं। स्रुवा सो लँगूर बल मूल प्रतिकूल हवि स्वाहामहा हाँकि हाँकि हुने हनुमान हैं ७ गाज्यो कपि गाज ज्यों बिराज्यो ज्वाल-जालयुत भाजे बीर धीर अकुलाइ उठ्यो रावनो। धावो धावो धरो सुनि धाये यातुधान धारि बारि धारा उलचै जलद जौन सावनो॥ लपट झपट झहराने हहराने बात भहराने भट पर्यो प्रबल परावनो। हकनि ढकेलि पेलि सचिव चले लै ठेलि नाथ न चलैगो बल अनल भयावनो८ बड़ो बिकराल बेष देखि सुनि सिंहनाद डर्यो मेघनाद सबिषाद कहै रावनो। बेगजितो मारुत प्रताप मारतण्ड कोटि कालहू करालता बड़ाई जीतो बावनो॥ तुलसी सयाने

यातुधाने पछिताने कहैं जाको ऐसो दूत सो साहिब अबै आवनो। काहे की कुशल रोषे राम बाम देव हू की बिषम बली सों बादि बैर को बढ़ावनो ६ पानी पानी पानी सब रानी अकुलानी कहैं जाति हैं परानी गति जानी गज चालिहै। बसन बिसारे मणि भूषण सँभारत न आनन सुखाने कहैं क्यों हू कोऊ पालिहै॥ तुलसी मदोवै मींजै हाथ धुनि माथ कहै काहू कान कियो न मैं केतो कह्यो कालि है। बापुरे बिभीषण पुकारि बार बार कह्यो बानर बड़ी बलाय घने घर घालि है १० कानन उजार्‌यो तौ उजार्‌यो न बिगार्‌यो कछु बानर बिचारो बाँधि आन्यो हठि हार सों। निपट निडर देखि काहू न लख्यो बिशेषि दीन्हों न छुड़ाय कहि कुल के कुठार सों॥ छोटे औ बड़ेरे मेरे पूतऊ अनेरे सब साँपनि सों खेलैं मेलैं गरे छुरा धार सों। तुलसी मदोवै रोइ रोइ कै बिगोवै आपु बार बार कह्यों मैं पुकारि दाढ़ीजार सों ११ रानी अकुलानी सब डाढ़त परानी जाहिं सकैं न बिलोकि बेष केशरीकुमार को। मींजि मींजि हाथ धुनि माथ दशमाथ तिय तुलसी तिलो न भयो बाहिर अगार को॥ सब असबाब डाढ़े मैं न काढ़े तैं न काढ़े जिय की परी सँभार सहन भँडार को। खीझति मदोवै सबिषाद

देखि मेघनाद बयो सुनियत सब याही दाढ़ीजार को १२
रावण की रानी यातुधानी बिलखानी कहै हाहा कोऊ कहै
बीस बाहु दशमाथ सों। काहे मेघनाद काहे काहेरे महोदर
तू धीरज न देत लाइ लेत क्यों न हाथ सों॥ काहे अति-
काय काहे काहेरे अकंपन अभागे तीय त्यागे भोंड़े भागे जात
साथ सों। तुलसी बढ़ाइ बाद शालत बिशाल बाहैं याही
बल बालि सों बिरोध रघुनाथ सों १३ हाट बाट कोट
ओट अटन अगार पौरि खोरि खोरि दौरि दौरि दीन्ही
अति आगि है। आरत पुकारत सँभारत न कोऊ काहू
व्याकुल जहाँ सो तहाँ लोग चले भागिहै॥ बालधी
फिरावै बार बार झहरावै झरै बूँदियासी लंक पघिलाइ
पाग पागिहै। तुलसी बिलोकि अकुलानी यातुधानी कहैं
चित्र हू के कपि सों निशाचर न लागिहै १४ लागि लागि
आगि भागि भागि चलें जहाँ तहाँ धीय को न माय बाप
पूत न सँभारहीं। छूटे बार बसन उघारे धूम धुंधअंध कहैं
बारे बूढ़े बारि बारि बार बारहीं॥ हय हिहिनात भागे जात
घहरात गज भारी भीर ठेलि पेलि रौंदि खौंदि डारहीं।
नाम लै चिलात बिललात अकुलात अति तात तात तौंसि-
यत झौंसियत झारहीं १५ लपट कराल ज्वालजालमाल

दुहूँ दिशि धूम अकुलाने पहिचाने कौन काहिरे। पानी को ललात बिललात जरे गात जात परे पाँय माल जात आत तू निबाहिरे॥ प्रिया तू पराहि नाथ नाथ तू पराहि बाप बाप तू पराहि पूत पूत तू पराहिरे। तुलसी बिलोकि लोक व्याकुल बेहाल कहैं लेहि दशशीश अब बीस चषु चाहिरे १६ बीथिका बजार प्रति अटनि अगार प्रति पँवरि पगार प्रति बानर बिलोकिये। अर्द्ध उर्द्ध बानर बिदिशि दिशि बानर है मानहु रह्यो है भरि बानर तिलोकिये॥ मूँदे आँखि हिये में उघारे आँखि आगे ठाढ़ो धाइ जाइ जहँ तहँ और कोऊ कोकिये। लेहु अब लेहु तब कोऊ न सिखावो मानो सोइ सतराइ जाइ जाहि जाहि रोकिये १७ एक करै धौंज एक कहै काढ़ो सौंज एक औंजि पानी पीकै कहै बनत न आवनो। एक परे गाढ़े एक डाढ़तहि काढ़े एक देखत हैं ठाढ़े कहैं पावक भयावनो॥ तुलसी कहत एक नीके हाथ लाये कपि अजहूँ न छाँड़ै बाल गालनो बजावनो। धावरे बुझावरे कि बावरे जियावरे हो औरे आगि लागी न बुझावै सिंधु सावनो १८ कोपि दशकंध तब प्रलय पयोद बोले रावण रजाइ धाइ आये यूथ जोरिकै। कह्यो लंकपति लंक बरत बुताओ बेगि बानर बहाय मारौ बारि माहँ बोरिकै॥ भले

नाथ नाय माथ चले पाथप्रदनाथ बरषै मुसलधार बार बार घोरिकै। जीवनते जागी आगी चपरि चौगुनी लागी तुलसी भभरि मेघ भागे मुख मोरिकै १९ इहाँ ज्वाल जरे जात ह्वाँ गलानि गरे गात सूखे सकुचात सब कहत पुकार हैं। युग षट भानु देखे प्रलय कृशानु देखे शेषमुख अनल बिलोके बार बार हैं॥ तुलसी सुन्यो न कान सलिलसर्पी समान अति अचरज किये केशरीकुमार हैं। बारिद बचन सुनि धुने शीश सचिवन्हि कहै दशशीश ईश बामता बिकार हैं २० पावक पवन पानी भानु हिमवान यम काल लोकपाल मेरे डर डाँवाडोल हैं। साहिब महेश सदा शंकित रमेश मोहिं महातप साहस बिरंचि लिये मोल हैं॥ तुलसी तिलोक आज दूजो न बिराजै राज बाजे बाजे राजनि के बेटी बेटा ओल हैं। को हैं ईश नाम बाम बाम होत मोहूँ सन मालवान रावरे के बावरे से बोल हैं २१ भूमि भूमिपाल ब्याल पालक पताल नाकपाल लोकपाल जेते सुभट समाज हैं। कहैं मालवान यातुधानपति रावरे को मनहूँ अकाज आनै ऐसो कौन आज हैं॥ राम कोह पावक समीर सीय श्वास कीश ईश बामता बिलोकु बानर के ब्याज हैं। जारत प्रचारि फेरि फेरि सो निशंक लंक जहाँ बाँको बीर

तोसे शूरशिरताज हैं २२ पान पकवान बिधि नाना कैं सँधानो सीधो बिबिध बिधान धान बरत बखारहीं। कनक किरीट कोटि पलँग पेटारे पीढ़ काढ़त कहार सब जरे भरे भारहीं॥ पावक प्रबल बाढ़े जहँ काढ़े तहँ डाढ़े झपट लपट भरे भवन भँडारहीं। तुलसी अगार न पगार न बजार बच्यो हाथी हथसार जरे घोरे घोरसारहीं २३ हाट बाट हाटक पिघिल चलो घी सो घनो कनककराही लंक तलफत ताय सों। नाना पकवान यातुधान बलवान सब पागि पागि ढेरी कीन्ही भली भाँति भाय सों॥ पाहुने कृशानु पवमान सो परोसो हनुमान सनमानिकै जेवाँये चित चाय सों। तुलसी निहारि अरि नारि दै दै गारि कहैं बावरे सुरारि बैर कीन्हो राम राय सों २४ रावण सो राज रोग बाढ़त बिराट उर दिन दिन बिकल सकल सुख राँक सो। नाना उपचार करि हारे सुर सिद्ध मुनि होत न बिशोक ओत पावै न मनाक सो॥ राम की रजाइते रसाइनी समीर सूनु उतरि पयोधि पार शोधि सर बाँक सो। यातुधान बुट पुटपाक लंक जातरूप रतन यतन जारि कियो है मृगांक सो २५ जारि बारिकै बिधूम बारिधि बुताइ लूम नाइ माथो पगनि भो ठाढ़ो कर जोरिकै। मातु कृपा कीजै सहि-

दानि दीजै सुनि सीय दीन्ही है अशीश चारु चूड़ामणि छोरिकै ॥ कहा कहौं तात देखे जात ज्यों बिहात दिन बड़ी अवलम्ब ही सो चले तुम तोरिकै। तुलसी सनीर नैन नेह सों शिथिल बैन बिकल बिलोकि कपि कहत निहोरिकै२६ दिवस छ सात जात जानबे न मातु धरु धीर अरि अंत की अवधि रही थोरिकै। बारिधि बँधाइ सेतु ऐहैं भानुकुल-केतु सानुज कुशल कपि कटक बटोरिकै ॥ बचन बिनीत कहि सीता को प्रबोध करि तुलसी त्रिकूट चढ़ि कहत डफो-रिकै। जै जै जानकीश दशशीश करि केशरी कपीश कूद्यो बातजात बारिधि हलोरिकै २७ साहसी समीरसूनु नीर-निधि लाँघि लखि लंक सिद्ध पीठि निशि जागो है मशान सो। तुलसी बिलोकि महा साहस प्रसन्न भई देबी सीय सारिखी दियो है बरदान सो॥ बाटिका उजारि अक्षधारि मारि जारि गढ़ भानुकुल भानु को प्रताप भानु भानसो। करत बिशोक लोक कोकनद कोक कपि कहै जाम्बवन्त आयो आयो हनुमान सो २८ गगन निहारि किलकारी भारी सुनि हनुमान पहिंचानि भये सानँद सचेत हैं। बूड़त जहाज बच्यो पथिक समाज मानो आजु जाये जानि सब अंकमाल देत हैं॥ जै जै जानकीश जै जै लषण कपीश

कहि कूदे कपि कौतुकी नटत रेत रेत हैं ॥ अङ्गद मयंद नलनील बलशील महा बालधी फिरावैं मुख नानागति लेत हैं २९ आये हनुमान प्राण हेत अंकमाल देत लेत पगधूरि एक चुम्बत लँगूर हैं। एक बूझै बार बार सीय समाचार कहौ पवनकुमार भो बिगत श्रमशूल हैं ॥ एक भूखे जानि आगे आनि कंद मूल फल एक पूजै बाहुबल मूल तोरि फूल हैं। एक कहै तुलसी सकल सिद्धि ताके जाके कृपा-पाथनाथ सीतानाथ सानुकूल हैं ३० सीय को सनेह शील कथा तथा लंक कहै चले जात चाय सों सिराने पथ छन में। कह्यो युवराज बोलि बानर समाज आज खाहु फल सुनि पेलि पैठे मधुबन में ॥ मारे बागवान ते पुकारत देवा-नगे उजारे बाग अंगदादि खाये घाय तन में। कहै कपि-राज करि आये कीश काज महाराज की शपथ महामोद मेरे मन में ३१ नगर कुबेर को सुमेर की बराबरी बिरंचि बुद्धि को बिलास लंक निर्माण भो। ईशहि चढ़ाये शीश बीस बाहु बीर तहाँ रावण सो राजा राज तेज को निधान भो ॥ तुलसी त्रिलोक की समृद्धि सौंज सम्पदा सकेलि चाकि राखी राशि जाँगर जहान भो। तीसरे उपास बनबास सिन्धु पास सो समाज महाराजजी को एक दिन दान भो ३२ ॥

इति सुन्दरकांड समाप्त। ५।

अथ लंकाकांड प्रारंभ

घनाक्षरी

बड़े बिकराल भालु बानर बिशाल बड़े तुलसी बड़े पहाड़ लै पयोधि तोपिहैं। प्रबल प्रचण्ड बलबण्ड बाहु-दण्ड खण्डि मण्डि मेदिनी को मण्डलीकलीक लोपिहैं॥ लंकदाह देखे न उछाह रह्यो काहुन को कहैं सब सचिव पुकारि पाँवरोपिहैं। बाचिहै न पाछे त्रिपुरारिहू मुरारिहू के को है रण रारि को जो कोशलेश कोपिहैं १ त्रिजटा कहति बारबार तुलसीश्वरी सों राघौ बाण एकही समुद्र सातो शोषिहैं। सकुल सँहारि यातुधान धारि जम्बु-कादि योगिनी जमाति कालिकाकलाप तोषिहैं॥ राज दै निवाजिबो बजाइकै बिभीषण को बजैं ब्योम बाजने बिबुध प्रेम पोषिहैं। कौन दशकन्ध कौन मेघनाद बापुरो को कुम्भकर्ण कीट जब राम रण रोषिहैं २ बिनय सनेह सों कहति सिय त्रिजटा सों पाये कछु समाचार आरजसुवन के। पाये जु बँधाये सेतु आये भानुकुलकेतु आये देखि देखि दूत दारुण दुवन के॥ बदन मलीन बलहीन देखि देखि मानो मिटे घटे तमिचर तिमिर भुवन के। लोकपति शोक कोक मूँदे कपि कोकनद दण्ड द्वै रहे हैं रघुआदित उवन के ३॥

झूलना

सुभुज मरीचखर त्रिशिर दूषण बली बधत ज्यहि दूसरो शरनसाँध्यो।
आनिपरबाम विधिवाम त्यहि रामसौं सकत संग्राम दशकंधकांध्यो॥
समुझितुलसीश कपिकर्मघरघरघैरु बिकलसुनिसकल पाथोधिबांध्यो।
बसत गढ़बंक लंकेश नायक अछत लंक नहिं खात कोउ भातरांध्यो ४

सवैया।

बिश्वजयी भृगुनायक से बिनु हाथ भये हनि हाथ हजारी।
मातुल मातुल की न सुनी शिष का तुलसी कपि लंक न जारी॥
ह्वैहै भलो रघुनाथ मिलो फिरि बूझिहै को गज कौन गजारी।
कीर्ति बड़ी करतूति बड़ी जन बात बड़ी सो बड़ोइ बजारी ५
जब पाहन भे बनबाहन से उतरे बनरा जय राम रढ़े।
तुलसी लिये शैलशिला सब सोहत सागर ज्यों बलबारि बढ़े॥
करि कोप करैं रघुबीर को आयसु कौतुक ही गढ़ कूदि चढ़े।
चतुरंग चमू पल में दलिकै रण रावण राढ़ को हाड़ गढ़े ६

घनाक्षरी

बिपुल बिशाल बिकराल कपि भालु मानो काल बहु-
बेष धरे धाये किये करषा। लिये शिला शैल शाल ताल
औ तमाल तोरि तोपै तोयनिधि सुर को समाज हरषा॥
डगे दिग कुंजर कमठ कोल कलमले डोले धराधर धारि
धरा धर धरषा। तुलसी तमकि चलैं राघवशपथ करैं को

करै खटक कपि कटक अमरषा ७ आये शुकसारन बोलाये ते कहन लागे पुलकि शरीर सैना करत फहमही। महाबली बानर बिशाल भालु काल से कराल बिकराल हैं समाहिंगे कहाँ मही॥ हँस्यो दशकन्ध रघुनाथ को प्रताप सुनि तुलसी दुरावै मुख सूखत सहमही। राम के बिरोध बुरो बिधि हरि हरहू को सबको भलो है राजा राम के रहमही ८ आयो आयो आयो सोई बानर बहोरि भयो शोर चहुँ ओर लंक आये युवराज के। एक काढ़ै सौंज एक धौंज करै कहा ह्वैहै पोच भई महाशोच सुभट समाज के॥ गाज्यो कपिराज रघुराज की शपथ करि मूँदे कान यातुधान मानो गाजे गाज के। सहमि सुखात बातजात की सुरति करि लवा ज्यों लुकात तुलसी झपेटे बाज के ९ तुलसी सबल रघुबीरजी को बालिसुत वाहि न गनत बात कहत करेरी सी। बख-शीश ईशजी की खीश होत देखियत रिस काहे लागत कहत हौं मैं तेरी सी॥ चढ़ि गढ़ मढ़ दृढ़ कोट के कँगूरे कोपि नेक धका देहै ढैहै ढेलन की ढेरी सी। सुनु दशमाथ नाथ साथ के हमारे कपि हाथ लंका लाइहै तो रहैगी हथेरी सी १० दूषण बिराध खर त्रिशिरा कबन्ध बधे तालऊ बिशाल बेधे कौतुक है कालि को। एक ही बिशिख बश

भये बीर बाँकुरे सो तोहू है बिदित बल महाबली बालि को॥ तुलसी कहत हित मानत न नेकु संग मेरो कहा जैहै फल पैहै तू कुचालि को। बीर करि केशरी कुठार पानि मानि हारि तेरी कहा चली बूड़े तोसे गनै घालि को ११॥

सवैया

तोसों कहौं दशकन्धर रे रघुनाथ बिरोध न कीजिय बौरे।
बालि बली खरदूषण और अनेक गिरे जेते भीति में दौरे॥
ऐसिय हाल भई तोहिको न तो लै मिलु सीय चहै सुख जौरे।
राम के रोष न राखि सकैं तुलसी विधि श्रीपति शंकर सौरे १२

तू रचनीचरनाथ महा रघुनाथ के सेवक को जन होहौं।
है बलवान गली निज श्वान न लाज तु गाल बजावत सोहौं
बीसभुजा दशशीश हरौं न डरौं प्रभु आयसु भंगते जोहौं।
खेत में केहरि ज्यों गजराज दलौं दल बालि को बालक तोहौं १३

कोशलराज के काजहौं आजु त्रिकूट उखारि लै बारिधि बोरौं।
द्वै भुजदण्ड से अंडकटाह चपेट के चोट चटाक दै फोरौं॥
आयसुभंग ते जो न डरौं सब मींजि सभासद शोणित घोरौं।
बालि को बालक तौ तुलसी दशहूँ मुख के रण में रद तोरौं १४

अति कोप सों रोप्यो है पाँव सभा सब लंक सशंकित शोर मचा।
तम के घननाद से बीर प्रचारिकै हार निशाचर सैन पचा॥
न टरै पग मेरुहि ते गरुओ सो मनो महि संग बिरंचि रचा।
तुलसी सब शूर सराहत हैं जग में बलशालि है बालि बचा १५

घनाक्षरी

रोप्यो पाँव पैजकै बिचारि रघुबीर बल लागे भट सिमिट न नेकु टसकतु है। तज्यो धीर धरणि धरणिधर धसकत धराधर धीरभार सहि न सकतु है॥ महाबली बालि को दबत दलकत भूमि तुलसी उछलि सिन्धु मेरु मसकतु है। कमठ कठिनपीठ पट्ठा करो मन्दर को सोई आयो काम पै करेजो कसकतु है १६॥

झूलना

कनकगिरिश्रृंग चढ़ि देखि मर्कट कटक बदति मन्दोदरी परम भीता। सहसभुज मत्तगजराज नरकेशरी परशुधर गर्ब जेहि देखि बीता॥ दासतुलसी समर सबल कोशलधनी ख्यालहीं बालि बलशालि जीता। रेकन्त तृणदन्त गहि शरण श्रीरामकहि अजहुँ यहि भाँति लै सौंपु सीता १७ रे नीच मारीच बिचलाइ हति ताड़का भंजि शिवचाप सुख सबहिं दीन्ह्यो। सहसदशचारि खल सहित खरदूषणहि पठै यमधाम तैं तउ न चीन्ह्यो॥ मैं जो कहौं कन्त सुनु मन्त भगवन्त सों बिमुख है बालिफल कौन लीन्ह्यो। बीस भुज शीशदश खीश गये तबहिं जब ईश के ईश सों बैर कीन्ह्यो १८ बालि दलि कालि जलयान पाषान किये कन्त भगवन्त तैं तउ न चीन्हे। बिपुल बिकराल भट भालु कपि काल से संग तरु तुंग गिरि श्रृंग लीन्हे॥ आइगे

कोशलाधीश तुलसीश जेहि छत्र मिस मौलि दश दूरि कीन्हे। ईशबकशीश जनि खीश करु ईश सुनु अजहुँ कुल कुशल बैदेहि दीन्हे १९ सैन सम्मूह कपि कौन गनै अर्बुदै महाबलि बीर हनुमान जानी। भूलिहैं दशादिशा शीश पुनि डोलिहैं कोपि रघुनाथ जब बान तानी॥ बालिहू गर्ब जिय माहँ ऐसो कियो मारि दहपट्ट कियो यम की घानी। कहत मन्दोदरी सुनहिं रावण मतो बेगि ल देहि बैदेहि रानी २० गहन उजारि पुर-जारि सुतमारि तव कुशल गो कीश बरबैरि जाको। दूसरो दूत प्रणरोपि कोप्यो सभा खर्ब कियो सर्ब को गर्ब थाको॥ दास तुलसी सभय बदति मयनन्दिनी मन्दमति कन्त सुनु मन्त म्हांको। तौलौं मिलु बेगि नहिं जौलौं रण रोष भयो दाशरथि बीर बिरुदैत बांको २१॥

घनक्षरी

कानन उजारि अक्षमारि धारि धूरि कीन्ही नगर प्रचा-स्यो सो बिलोकयो बल कीश को। तुम्हैं बिद्यमान यातुधान मण्डली में कपि कोपि रोप्यो पाँव सो प्रभाव तुलसीश को॥ कन्त सुनु मन्त कुल अन्त किये अन्तहानि हातो कीजै हीयते भरोसो भुजबीश को। तौलौं मिलु बेगि जौलौं चाप न चढ़ायो राम रोषि बाण काढ़्यो ना दलैया दश-शीश को २२ पवन को पूत देख्यो दूत बीर बाँकुरो जो

बंक गढ़ लंक सों ढकाढकेलि ढाहिगो। बालि बलशालि को सो कालि दापदलि कोपि रोप्यो पाँव चपरि चमू को चाव चाहिगो॥ सोइ रघुनाथ कपिसाथ पाथनाथ बाँधि आयो नाथ भागे ते खिरिरखेह खाहिगो। तुलसी गरब तजि मिलिबे को साजसाजि देहि सिय नतो पिय पायमाल जाहिगो २३ उदधि अपार उतरतहू न लागी बार केशरी कुमार सो अदंड कैसो डाँड़िगो। बाटिका उजारि अक्ष रक्षकनि मारिभट भारी भारी रावरे को चाउरसो काँड़िगो॥ तुलसी तिहारे बिद्यमान युवराज आज कोपि पाँव रोप्यो सब छूँछे कैकै छाँड़िगो। कहेकी न लाज पिय अजहूँ न आये बाज सहित समाज गढ़ रांड़ कैसो भाँड़िगो २४ जाके रोष दुसह त्रिदोष दाहदूरि कीन्हें पैयत न क्षत्री खोज खोजत खलक में। माहिषमती को नाहु साहसी सहसबाहु समर समर्थ नाथ हेरिये हलक में॥ सहित समाज महाराज सो जहाजराज बूड़ि गयो जाके बल बारिधि छलक में। टूटत पिनाक के मनाक बाम रामसेते नाक बिनु भये भृगु-नायक पलक में २५ कीन्हीं छोणी क्षत्री बिनु क्षोणिप छपनहार कठिन कुठार पाणि बीर बानि जानिकै। परम कृपाल जो नृपाल लोकपालन पै जब धनुहाई ह्वैहै मन

अनुमानिकै ॥ नाक मैं पिनाक मिसि बामता बिलोकि राम रोक्यो परलोक लोकभारी भ्रम मानिकै । नाइ दशमाथ महि जोरि बीश हाथ पिय मिलिये पै नाथ रघुनाथ पहिं- चानिकै २६ कह्यो मत मातुल बिभीषणहु बारबार अंचल पसारि पिय पाँय लैलै हौंपरी । बिदित बिदेहपुर नाथ भृगु- नाथ गति समय सयानी कीन्ही जैसी आइ गौंपरी ॥ बायस बिराध खरदूषण कबंध बालि बैर रघुबीर के न पूरी काहू को परी । कंत बीसलोचन बिलोकिये कुमंत फल ख्याल लंकलाई कपि रांड़कीसी झोपरी २७ ॥

सवैया

रामसों शाम किये नितहै हित कोमलकाज न कीजिय टांठे ।
आपनि सूझि कहौं पिय बूझिये जूझिबे योग न ठाहरुनांठे ॥
नाथसुनी भृगुनाथ कथा बलि बालिगये चलि बात के सांठे ।
भाइ बिभीषण जाइ मिल्यो प्रभु आइपरे सुनि सायर कांठे २८
पालिबे को कपि भालुचमू यम काल करालहु कोपहरी है ।
लंक से बंक महागढ़ दुर्गम ढाहिबे दाहिबे को कहरी है ॥
तीतर तोम तमीचरसैन समीर को सूनु बड़ो बहरी है ।
नाथ भलो रघुनाथ मिलो रजनीचरसैन हिये हहरी है २९

घनाक्षरी

रोषे रण रावण बोलाये बीर बानइत जानत जे रीति

सब संयुग समाज की । चली चतुरंग चमू चपरि हने निशान सेना सराहन योग रातिचरराजकी॥ तुलसी बिलोकि कपि भालु किलकत ललकत लखि ज्यों कंगालपातरी सुनाज की । रामरुख निरखि हरषि हिय हनुमान मानो खेलकर खोली शीश ताजबाज की ३० साजिकै सनाह गजगाह से उछाह दल महाबली धाये बीर यातुधान धीर के । इहाँ भालु बन्दर बिशाल मेरु मन्दर से लिये शैल शाल तोरि नीरनिधि तीर के॥ तुलसी तमकि तकि भिरे भारी युद्ध क्रुद्ध सेनप सराहे निज निज भटभीर के । रुंडन के झुंड झूमि झूमि झुकरे से नाचैं समर सुमार शूर मारे रघुबीर के ३१ ॥

सवैया

तीखे तुरंग कुरंग सुरंगनि साजि चढ़े छटि छैल छबीले ।
भारी गुमान जिन्हैं मन में कबहूँ न भये रण में तनु ढीले ॥
केहरि से हरिके झपटे तुलसी पटके सब शूर सलीले ।
भूमि परे भट घूमि कराहत हांकिहने हनुमान हठीले ३२
शूर सजोइल साजि सुबाजि सुशेल धरे बगमेल चले हैं ।
भारी भुजा भरि भारी शरीर बली बिजयी सब भाँति भले हैं ॥
तुलसी जिन्हैं धाइधुकै धरणी धरणीधर घोर धकान हले हैं ।
ते रण तिच्छन तच्छन लाखन दानि ज्यों दारिद दाबि दले हैं ३३

गहि मंदर बंदर भालु चले सो मनो उनये घन सावन के।
तुलसी उत झुंड प्रचंड झुके झपटे भट जे सुरदावन के॥
बिरुझे बिरुदैत जे खेत अरे न टरे हठि बैर बढ़ावन के।
रणमारुमची उपरी उपरा भले बीर रघूपति रावन के ३४
शर तोमर शेल समूह पँवारत मारत बीर निशाचर के।
इतते तरुताल तमाल चले खर खंड प्रचंड महीधर के॥
तुलसी करि केहरि नाद भिरे भट खङ्गखगे खपुआ खर के।
नख दन्तन सों भुजदंड बिहंडत मुंड सों मुंड परे झर के ३५
रजनीचर मत्त गयन्दघटा बिघटे मृगराज के साज लरै।
झपटै भटकोटि मही पटकै गरजै रघुबीर की सौंह करै॥
तुलसी उत हांक दशानन देत अचेत भे बीर को धीर धरै।
बिरुझो रनमारुत को बिरुदैत जो कालहु काल को बूझि परै ३६
जे रजनीचर बीर बिशाल कराल बिलोकत काल न खाये।
ते रणरोर कपीश किशोर बड़े बरजोर परे फल पाये॥
लूमलपेटि अकाश निहारि कै हांकि हठी हनुमान चलाये।
सूखिगे गात चले नभ जात परे भ्रमवात न भूतल आये ३७
जो दशशीश महीधर ईश को बीस भुजा खुलि खेल निहारो।
लोकप दिग्गज दानव देव सबै सहमे सुनि साहस भारो॥
बीर बड़ो बिरुदैत बली अजहूँ जग गावत जासु पँवारो।
सो हनुमान हन्यो मुठिका गिरिगो गिरिराजज्यों गाज को मारो ३८
दुर्गम दुर्ग पहारते भारे प्रचंड महा भुजदंड बने हैं।

लख्य में पख्य रतिख्यन तेज से शूर समाज में गाज गने हैं ॥
ते बिरुदैत बली रण बाँकुरे हाँकि हठी हनुमान हने हैं ॥
नाम लै राम देखावत बंधुको घूमत घायल घाय घने हैं ३९

घनाक्षरी

हाथिनसों हाथी मारे घोरे घोरे सों सँहारे रथन सों रथ बिदरन बलवान की । चंचल चपेट चोट चरण चकोट चाहैं हहरानी फौजैं भहरानी यातुधानकी ॥ बार बार सेवक सराहना करत राम तुलसी सराहैं रीति साहेब सुजान की । लांबी लूम लसत लपेटि पटकत भट देखो देखो लषण लरनि हनुमान की ४० दबकि दबोरे एक बारिधि में बोरे एक मगन मही में एक गगन उड़ात हैं । पकरि पछोरे कर चरण उखारे एक चीर फारि डारे एक मींजि मारे लात हैं ॥ तुलसी लषण राम रावण बिबुध बिधि चक्रपाणि चण्डिपति चण्डिका सिहात हैं । बड़े बड़े बानइत बीर बलवान बड़े यातुधान यूथपति पातें बातजात हैं ४१ प्रबल प्रचण्ड बरिबण्ड बाहुदण्ड बीर धाये यातुधान हनुमान लियो घेरिकै । महाभुजदण्ड कुंजरारि ज्यों गरजि भट जहांतहां पटके लंगूर फेरि फेरिकै ॥ मारेलात तोरेगात भागेजात हाहा खात कहै तुलसीश राखि रामकी

सों टेरिकै। ठहर ठहर परे कहर कहर उठे हहर हहर हर सिद्ध हँसे हेरिकै ४२ जाकी बांकी बीरता सुनत सहमत शूर जाकी आंच अजहूं लसत लंक लाहसी। सोइ हनुमान बलवान बांको बानइत जोहै य।धान सेना चले लेत थाहसी॥ कंपत अकंपन सुखाय अतिकायकाय कुंभउकरण आय रह्यो पाय आहसी। देखे गजराज मृगराज ज्यों गरजि धायो बीर रघुबीर को समीरसूनु साहसी ४३

झूलना

मत्त भट मुकुट दशकण्ठ साहस शैल शृंग बिद्दरनि जनु बज्रटांकी। दशन धरि धरणि चिक्करत दिग्गज कमठ शेष संकुचित शङ्कित पिनाकी॥ चलत महि मेरु उच्छलत सागर सकल बिकल बिधि बधिर दिशि बिदिशि झांकी। रजनिचर घरनिघर गर्भ अर्भक स्रवत सुनत हनुमानकी हांकबांकी ४४ कौनकी हांकपर चौंकि चंडीश बिधि चण्डकर थकित फिरि तुरँग हांके। कौन के तेज बलसीम भट भीमसे भीमता निरखि करि नयन ढांके॥ दास तुलसीशके बिरद बरणत बिदुष बीर बिरुदैत बर बैरिधांके। नाक नरलोक पाताल कोउ कहत कहां हनुमान से बीर बांके ४५ यातु-घानावली मत्त कुंजर घटा निरखि गजराज मनो गिरिते

टूटयो । बिकट चटकन चोट चरण गहि पटकि महि निघटि गये सुभट सत सब को छूट्यो ॥ दास तुलसी परत धरणि धरकत झुकत हाटसी उठत जम्बुकनि लूटयो । धीर रघुबीर के बीर रण बांकुरे हांकि हनुमान कुलि कटक कूटयो ४६

छप्पय

कतहुँ बिटप भूधर उपारि अरिसैन बरषत ।
कतहुँ बाजि सों बाजि मर्दि गजराज करषत ॥
चरण चोट चटकन चकोट अरि उर शिर बज्जत ।
बिकट कटक बिद्दरत बीर बारिद जिमि गज्जत ॥
लंगूर लपेटत पटकि महि जयति राम जय उच्चरत ।
तुलसीश पवननन्दन अटल युद्ध क्रुद्ध कौतुक करत ४७

घनाक्षरी

अंग अंग दलित ललित फूले किंशुक से हने भट लाखन लषन यातुधान के । मारिकै पछारिकै उपारि भुजदण्ड चण्ड खण्ड खण्ड डारेते बिदारे हनुमान के ॥ कूदत कबंध के कदंब बंबसी करत धावत देखावत हैं लाघौ राघौ बान के । तुलसी महेश बिधि लोकपाल देवगण देखत बिमान चढ़े कौतुक मशान के ४८ लोथिन सो लोहू के प्रवाह चले जहां तहां मानहुँ गिरिन्ह गेरु झरना झरतु हैं ।

शोणित सहित घोर कुंजर करारे भारे कूलते समूल बाजि बिटप परतु हैं ॥ सुभट शरीर नीरचारी भारी भारी तहँ शूरन उछाह क्रूर कादर डरतु हैं। फेकरि फेकरि फेरु फारि फारि पेटखात काक कंक बालक कोलाहल करतु हैं ४६ ओझरीय झोरी काँधे आंतनकी सेल्ही बांधे मुण्डके कमण्डल खपर किये कोरिकै। योगिनी जमाति जोरि झुंड बनी तापसीसी नीर तीर बैठी सो समर सरि खोरिकै ॥ शोणित सों सानि सानि गूदा खात सतुआसे एक प्रेत पियत बहोरि घोरि घोरिकै। तुलसी बैताल भूत साथ लिये भूतनाथ हेरिहेरि हँसत हैं हाथ जोरि जोरिकै ५०

सवैया

राम शरासन ते चले तीर रहे न शरीर हड़ावरि फूटी।
रावण धीर न पीर गनी लखि लैकर खप्पर योगिनि जूटी ॥
शोणित छीट छटानि छुटी तुलसी प्रभु सोहै महाछबि छूटी।
मानौ मरकत शैल विशालमें फैलि चली बरबीरबहूटी ५१

घनाक्षरी

मानी मेघनादसो प्रचारि भिरे भारी भट आपने आपने पुरुषारथ न ढीलकी। घायल लषणलाल सुनि बिलखाने राम भई आश शिथिल जगन्निवास ढीलकी ॥ भाई को

न मोह छोह सीय को न तुलसीश कहै मैं बिभीषणकी
कछु न सबीलकी । लाज बांह बोलकी निवांजकी सँभार
सार साहेब न राम से बलाइ लेउँ शीलकी ५२

सवैया

कानन बास दशानन सों रिपु आननश्री शशि जीति लियो है ।
बालि महाबलशालि दल्यो कपि पालि बिभीषण भूप कियो है ॥
तीय हरी रणबन्धु परयो पै भरयो शरणागत शोच हियो है ।
बांह पगार कृपालु उदार कहां रघुबीरसों बीर बियो है ५३
लीन्ह उखारि पहार बिशाल चल्यो तेहि काल बिलंब न लायो ।
मारुतनन्दन मारुतको मनको खगराज को बेग लजायो ॥
तीखी तुरा तुलसी कहतो पै हिये उपमा को समाउ न आयो ।
मानो प्रतच्छ पर्वतकी नभ लीक लसी कपि यों धुकि धायो ५४

घनाच्छरी

चल्यो हनुमान सुनि यातुधान कालनेमि पठयो सो मुनि भयो पायो फल छलिकै । सहसा उखारो है पहार बहु योजन को रखवारे मारे भारे भूरि भट दलिकै ॥ बेग बल साहस सराहत कृपालु राम भरतकी कुशल अचल लायो चलिकै । हाथ हरिनाथ के बिकाने रघुनाथ जनु शीलसिंधु तुलसीश भलो मान्यो भलिकै ५५ बाप दियो कानन भो आनन शुभानन सों बैरी भो दशानन सो तीय को हरणभो ।

बालि बलशालि दलि पालि कपिराजकै बिभीषण निवाजि सेतुसागर तरण भो ॥ घोर रारि हेरि त्रिपुरारि बिधि हारे हिय घायल लषणबीर बानर बरण भो । ऐसे शोक में त्रिलोककै बिशोक पलही में सबही के तुलसी के साहेब शरण भो ५६

सवैया

कुंभकरन्न हन्यो रण राम दल्यो दशकंधर कंधर तोरे ।
पूषण वंश बिभूषण पूषण तेज प्रताप गरे अरिओरे ॥
देव निशान बजावत गावत धावत गोमन भावत भोरे ।
नाचत बानर भालु सबै तुलसी कहि हारे हहाभय होरे ५७

घनाक्षरी

मारे रण रातिचर रावण सकुलदल अनुकूल देव मुनि फूल बरसतु हैं । नाग नर किन्नर बिरंचि हरि हर हेरि पुलक शरीर हिये हेतु हरषतु हैं ॥ बाम ओर जानकी कृपानिधान के बिराजैं देखत बिषाद मिटे मोद सरसतु हैं । आयसु भो लोकनि सिधारे लोकपाल सब तुलसी निहालकै कै दिये सरखतु हैं ५८

इति लंकाकांड सम्पूर्ण । ६ ।

अथ उत्तरकांड प्रारम्भ

सवैया

बालि से बीर बिदारि सुकण्ठ थप्यो हरषे सुर बाजने बाजे ।
दाशरथी दशकन्ध दल्यो पल लंक बिभीषण राजबिराजे ॥
राम सुभाव सुने तुलसी हुलसे अलसी हमसे गल गाजे ।
कायर कूर कपूतन की हद तेऊ गरीबनिवाज निवाजे १
बेद पढ़ैं बिधि शम्भु सभीत पुजावन रावन सों नित आवैं ।
दानव देव दयावने दीन दुखी दिन दूरिहिते शिर नावैं ॥
ऐसेहु भाग भगे दशभालते जो प्रभुता कवि कोबिद गावैं ।
रामसे बाम भये त्यहि बामहि बाम सबै सुखसंपति लावैं २
बेदाबिरुद्ध मही मुनि साधु सशोक किये सुरलोक उजार्यो ।
और कहा कहौं तीय हरी तबहूं करुणाकर कोप निवार्यो ॥
सेवक छोहते छांड़िछमा तुलसी लख्यो राम सुभाव तिहार्यो ।
तौलौं न दांपदल्यो दशकन्धर जौलौं बिभीषण लात न मार्यो ३
शोक समुद्र निमज्जत काढ़ि कपीश कियो जग जानत जैसो ।
नीच निशाचर बैरी को बंधु बिभीषण कीन्ह पुरंदर तैसो ॥
नाम लिये अपनाइ लियो तुलसी सो कहौ जग कौन अनैसो ।
आरत आरतिभंजन राम गरीबनिवाज न दूसर ऐसो ४
मीत पुनीत किये कपि भालुको पाल्यो ज्यों काहु न बालतनूजो।
सज्जन सींव बिभीषण भो अजहूं बिलसै बरबंधुबधूजो ॥

कोशलपाल बिना तुलसी शरणागतपाल कृपाल न दूजो ।
क्रूर कुजाति कपूत अघी सबकी सुधर जो करै नर पूजो ५
तीयशिरोमणि सीय तजी ज्यहि पावक की कलुषाई दही है ।
धर्मधुरन्धर बंधु तज्यो पुरलोगन की बिधि बोलि कही है ॥
कीश निशाचर की करणी न सुनी न बिलोकि न चित्त रही है ।
राम सदा शरणागत की अनखोही अनैसी सुभाय सही है ६
अपराध अगाध भये जनते अपने उर आनत नाहिंनजू ।
गणिका गजगीध अजामिल के गनि पातकपुंज सेराहिंनजू ॥
लिये बारकनाम सो धाम दियो ज्यहिधाम महामुनि जाहिंनजू ।
तुलसी भजु दीनदयालहि रे रघुनाथ अनाथहि दाहिन जू ७
प्रभु सत्य करी प्रहलादगिरा प्रकटे नरकेहरि खम्भमहां ।
झषराज ग्रस्यो गजराज कृपा ततकाल बिलम्ब किये न तहां ॥
सुरसाखी दै राखी है पांडुबधू पट लूटत कोटिन भूप जहां ।
तुलसीभजु शोचबिमोचनको जनको प्रण राम न राख्यो कहां ८
नरनारि उघारि सभामहँ होत दिये पट शोच हस्यो मनको ।
प्रहलाद बिषाद निवारण वारण तारण मीत अकारनको ॥
जो कहावत दीनदयाल सही ज्यहि भार सदा अपने पनको ।
तुलसी तजि आन भरोस भजै भगवान भलो करि हैं जनको ९
ऋषिनारि उधारि कियो शठ केवट मीत पुनीत सुकीर्ति लही ।
निजलोक दियो शबरी खगको कपि थापिसो मालुम है सबही ॥
दशशीश बिरोध सभीत बिभीषण भूप कियो जगलीक रही ।

करुणानिधि को भजुरे तुलसी रघुनाथ अनाथके नाथ सही १०
कौशिक विप्रबधू मिथिलाधिप के सब शोच दले पलमाहैं।
बालि दशानन बंधु कथा सुनि शत्रु सुसाहिब शील सराहैं॥
ऐसी अनूप कहै तुलसी रघुनायककी अगुणी गुणगाहैं।
आरत दीन अनाथनको रघुनाथ करैं निजहाथन छाहैं ११
तेरे बेसाहे बेसाहत औरनि और बेसाहिके बेंचनहारे।
व्योम रसातल भूमि भरे नृप क्रूर कुसाहिब से तिहुँखारे॥
तुलसी तेहि सेवत कौन मरै रजते लघु को करै मेरुते भारे।
स्वामि सुशील समर्थ सुजान सो तोसौं तुही दशरत्थ दुलारे१२

घनाक्षरी

यातुधान भालु कपि केवट बिहंग जो जो पालो नाथ सद्य सो सो भयो काम काजको। आरत अनाथ दीन मलिन शरण आये राखे सनमानि सो स्वभाव महाराज को॥ नाम तुलसी पै थोड़े भाग्य ते कहायो दास किये अंगीकार ऐसे बड़े दगाबाज को। साहब समर्थ दशरत्थके दयाल देव दूसरो न तोसों तुही आपने की लाज को १३ महाबली बालि दलि कायर सुकंठ कपिराज किये महाराज हौं न काहूकामको। भ्रातघात पातकी निशाचर शरण आये किये अंगीकार नाथ येते बड़े बाम को॥ राय दशरत्थ के समर्थ तेरे नाम लिये तुलसी से क्रूरको कहत जग रामको। आपने

निवाजे की तो लाज महाराजको सुभाव समुझत मन मुदित गुलाम को १४ रूप शीलसिंधु गुणसिंधु बंधुदीन को दयानिधान जान मणि बीरबाहु बोल को। श्राद्ध कियो गीध को सराहे फल शबरी के शिलाशाप शमन निबाह्यो नेह कोलको॥ तुलसीउराउ होत रामको स्वभाव सुनि को न बलिजाय न बिकाइ बिनमोल को। ऐसेहु सुसाहब सों जाको अनुराग न सो बड़ोई अभागो भाग भागो लोभ लोलको १५ शूरशिरताज महाराजन के महाराज जाको नाम लेतही सुखेत होत ऊसरो। साहिब कहां जहान जानकीश सों सुजान सुमिरे कृपाल के मराल होत खूसरो॥ केवट पषान यातुधान कपि भालु तारे अपनायो तुलसी सो धींग धमधूसरो। बोल को अटल बाँह को पगार दीनबन्धु दूबरे को दानि को दयानिधान दूसरो १६ कीबेको बिशोक लोक लोकपालहूते सब कहूं कोउ भो न चरवाहो कपि भालु को। पविको पहार कियो ख्यालही कृपाल राम बापुरो बिभीषण घरौंधा होतो बाल को॥ नाम ओट लेतही निखोट होत खोटै खल चोट बिन मोटपाइ भयो न निहाल को। तुलसी की बार बलि ढील होत शीलसिन्धु बिगरी सुधारिबेको दूसरो दयाल को १७ नाम लिये पूत को पुनीत

किये पातकी सुआरति नेवारी प्रभु पाहि कहे पीलकी। छलिनकी छौड़ी सो निगोड़ी छोटी जाति पांति कीन्ही लीन आपमें भामिनी भौंड़ी भीलकी ॥ तुलसी औ तारिबो बिसारिबो न अन्त मोहूं नीकेहै प्रतीति रावरे स्वभाव शीलकी। देव तौ दयानिकेत देत दादि दीनन की मेरी बार मेरीही अभाग नाथ ढीलकी १८ आगे परे पाहन कृपा किरात कोलनि कपीश निशिचर अपनाय नाय माथजू। सांची सेवकाई हनूमान की सुजानराय ऋणिया कहायो है बिकाने ताके हाथजू ॥ तुलसी से खोटे खरे होत ओटनामहीकी माटी महँगाती मृगमद हूके साथजू। बात चले बात को न मानिबो बिलग बलि काकी सेवा रीझि के निवाजे रघुनाथजू १९ कौशिक की चलत पषान की परस पाँय टूटत धनुष बनिगई है जनक की। कोल भील शबरी बिहङ्ग भालु रातिचर रतिनके लालचिन प्रापति मनक की ॥ कोटिकला कुशल कृपाल नतपाल बलि बातहूं कितेक तृण तुलसी तनककी। राय दशरत्थ के समर्थ राम राजमणि तेरे हेरे लोपै लिपि बिधिहू गनककी २० शिलाशाप पाप गुह गीध को मिलाप शबरी के बाप आप चलि गयेहौ सो सुनी मैं। सेवक सराहे कपिनायक बिभीषण भरत सभा सादर सनेह

सुरधुनी मैं ॥ आलसी अभागी अघी आरत अनाथपाल साहब समर्थ एक नीकेमन गुनी मैं । दोष दुख दारिद दलैया दीनबन्धु राम तुलसी न दूसरो दयानिधान दुनी मैं २१ मीत बालि बन्धु पूत दूत दशकन्धबन्धु सचिव सराध कियो शबरी जटाइको । लङ्कजरी जोहै जिय शोचसो बिभीषणको कहौ ऐसे साहबकी सेवा न खटाइको ॥ बड़े एकएकते अनेक लोक लोकपाल अपन अपन कीतौ कहैगो घटाइको । सांक-रेको सेइबो सराहिबे सुमिरिबेको रामसों न साहब न कुमति कटाइको २२ भूमिपाल ब्यालपाल लोकपाल नाकपाल कारणकृपाल मैं सबैके जीकी थाहली । कादरको आदर काहूके नाहीं देखियत सबन सोहात है सेवा सुजान टाहलीं ॥ तुलसी सुभाय कहै नहीं कछु पक्षपात कौने ईश किये कीश भालु खासमाहली । रामही के द्वारे पै बुलाइ सनमानियत मोसे दीन दूबरे कपूत कूर काहली २३ सेवा अनुरूप फल देत भूप कूप ज्यों बिहीन गुण पथिक पियासे जात पथके । लेखे जोखे चोखे चित तुलसी स्वारथहित नीके देखे देवता देवैया गुण गथके ॥ गीध मानो गुरु कपि भालु मानो मीत-के पुनीत गीतसाके सब साहब समर्थ के । और भूप परखि सुलाखि तौलि साई लेत लसमके खसम तुहीं पै दशरथके २४

रीति महाराज की निवाजिये जो मांगनो सो दोष दुख दारिद दरिद्र कैकै छोड़िये । नाम जाको कामतरु देत फलचारि ताहि तुलसी बिहाइ कै बबूर रेंड गोड़िये ॥ यांचै को नरेश देश देशको कलेश करै देहै तो प्रसन्न ह्वै बड़ी बड़ाइ बोड़िये । कृपापाथ नाथ लोकनाथ नाथ सीतानाथ तजि रघुनाथ हाथ और काहि ओड़िये २५

सवैया।

जाके बिलोकेते लोकप होत बिशोक लहै सुरलोक सुठौरहि ।
सो कमला तजि चंचलता अरु कोटिकला रिझवे शिरमौरहि ॥
ताको कहाइ कहै तुलसी तू लजाहि न मांगत कूकुर कौरहि ।
जानकीजीवनको जनह्वै जरिजाउ सो जीह जो जांचत औरहि २६
जड़ पंच मिले जेहि देहकरी करनी देखु धौं धरनीधरकी ।
जनकी कहु क्यों करि है न सँभार जो सार करै सचराचरकी ॥
तुलसी कहु राम समान को आनहै सेवकि जासु रमा घरकी ।
जगमें गति जाहि जगत्पतिकी परवाहि है ताहि कहा नरकी २७
जग यांचिय कोउ न यांचिय तो जिय यांचिय जानकिजानहिरे ।
जेहि यांचत यांचकता जरि जाइ जो जारत जोर जहानहिरे ॥
गति देखु बिचार बिभीषणकी अरु आनि हिये हनुमानहिरे ।
तुलसी भजु दारिद दोष दवानल संकट कोटि कृपानहिरे २८
सुनु कान दिये नित नेम लिये रघुनाथहिके गुणगाथहिरे ।

सुख मंदिर सुंदर रूप सदा उर आनि धरे धनुभाथहिरे ॥
रसना निशि बासर सादर सो तुलसी जप जानकीनाथहिरे ।
करु संग सुशील सुसंतन सों तजि कूर कुपंथ कुसाथहिरे २९
सुत दार अगार सखा परिवार बिलोकु महा कुसमाजहिरे ।
सबकी ममता तजिकै समता सजि सन्तसभा न बिराजहिरे ॥
नरदेह कहा करि देखु बिचार गँवार बिगार न काजहिरे ।
जनि डोलहि लोलुप कूकुर ज्यों तुलसी भजु कोशलराजहिरे ३०
बिषया परनारि निशातरुणाइ सो पाइ परयो अनुरागहिरे ।
यमके पहरू दुख रोग बियोग बिलोकतहूँ न बिरागहिरे ॥
ममता बशते सब भूलिगयो भयो भोर महाभय भागहिरे ।
जरठाई दशा रबिकाल उयो अजहूँ जड़जीव न जागहिरे ३१
जनम्यो जेहि योनि अनेक क्रिया सुख लागिकरी न परे बरणी ।
जननी जनकादि हितू भये भूरि बहोरि भई उरकी जरणी ॥
तुलसी अब रामको दास कहाय हिये धरु चातक की धरणी ।
करि हंसको बेष बड़ो सबसो तजि दे बक बायस की करणी ३२
भलि भारत भूमि भले कुलजन्म समाज शरीर भलो लहिकै ।
ममता करषा तजिकै बरषा हिम मारुत घाम सदा सहिकै ॥
जो भजै भगवान सयान सोई तुलसी हठ चातक ज्यों गहिकै ।
न तो और सबै बिष बीजबये हर हाटक कामधुका नहिकै ३३
सो सुकृती शुचिमन्त्र सुसन्त सुजान सुशील शिरोमणिस्वै ।
सुर तीरथ तासु मनावत आवत पावन होत है ताननछ्वै ॥

गुण गेह सनेह को भाजन सो सबहीसों उठाइ कहौं भुज द्वै।
सतिभाव सदा छल छांड़ि सबै तुलसी जो रहै रघुबीर को ह्वै ३४
सो जननी सो पिता सोइ भ्रात सो भामिनि सो सुतसो हित मेरो।
सोई सगो सो सखा सोइ सेवक सो गुरु सो सुरसाहिब चेरो॥
सो तुलसी प्रिय प्राण समान कहां लौं बनाइ कहौं बहुतेरो।
जो तजि देह को गेहको नेह सनेह सों रामको होइ सबेरो ३५
राम हैं मातु पिता सुत बन्धु औ सङ्गी सखा गुरु स्वामि सनेही।
राम कि सौंह भरोसो है रामको राम रँगी रुचि राचो न केही॥
जीवत राम मुये पुनि राम सदा रघुनाथहि की गति जेही।
सोई जिये जगमें तुलसी नतु डोलत और मुये धरि देही ३६
सियराम स्वरूप अगाध अनूप बिलोचन मीननको जलु है।
श्रुति रामकथा मुख रामको नाम हिये पुनि रामहि को थलु है॥
मति रामहि सों गति रामहि सों रति रामसों रामहिको बलु है।
सबकी न कहै तुलसी के मते यतनो जगजीवन को फलु है ३७
दशरत्थ के दानि शिरोमणि राम पुराण प्रसिद्ध सुन्यो यशमै।
नर नाग सुरासुर याचक जो तुमसों मन भावत पायो नकै॥
तुलसी करजोरि करै बिनती जो कृपाकरि दीनदयाल सुनै।
जेहि देह सनेह न रावरेसों ऐसी देहधराईकै काहजियै ३८
झूठोहै झूठोहै झूठो सदा जग सन्त कहन्त जे अन्त लहाहै।
ताको सहै शठ सङ्कट कोटिक काढ़त दन्त करन्त हहाहै॥
जानपनी को गुमान बड़ो तुलसी के बिचार गँवार महाहै।

जानकीजीवन जान न जान्यो तो जानकहावत जान कहाहै ३९
तिनते खर शूकर श्वान भले जड़ता बशते न कहैं कछुवै।
तुलसी जेहि रामसों नेह नहीं सो सही बिनु पूंछ बिषाननहै॥
जननी कत भारमुई दशमास भई किन बांझ गई किनच्वै।
जरिजायसो जीवन जानकिनाथ जिये जग में तुम्हरो बिनुहै ४०
गज बाजि घटा भले भूरिभटा बनिता सुत भौंह तकैं सबकै।
धरणी धन धाम शरीर भलो सुरलोकहुँ चाहिय है सुखस्वै॥
सब फोटक साटक हैं तुलसी अपनो न कछू सपनो दिन द्वै।
जरिजाय सो जीवन जानकिनाथ जिये जग में तुम्हरो बिनुहै ४१
सुरराज सो राज समाज समृद्धि बिरञ्चि धनाधिपसो धनभो।
पवमानसो पावकसो यम सोमसो पूषनसो भव भूषनभो॥
करि योग समाधि समीरन साधिकै धीर बड़ो बशहू मनभो।
सब जाय सुभाय कहै तुलसी जो न जानकीजीवन को जनभो ४२
कामसे रूप प्रताप दिनेशसे सोमसे शील गणेशसे माने।
हरिचन्दसे सांचे बड़े बिधिसे मघवासे महीप बिषै सुखसाने॥
शुकसे मुनि शारद से बकता चिरजीवन लोमशते अधिकाने।
ऐसे भये तौ कहा तुलसी जोपै राजिवलोचन राम न जाने ४३
झूमत द्वार अनेक मतङ्ग जँजीर जड़े मदअम्बु चुचाते।
तीषे तुरङ्ग मनोगति चंचल पौनके गौनहुते बढ़िजाते॥
भीतर चन्द्रमुखी अवलोकति बाहर भूप खड़े न समाते।
ऐसे भये तौ कहा तुलसी जोपै जानकिनाथके रंग न राते ४४

राज सुरेश पचाशक को बिधिके कर को जो पटो लिखिपाये।
पूत सपूत पुनीत प्रिया निजसुन्दरता रतिको मद नाये॥
सम्पति सिद्धि सबै तुलसी मनकी मनसा चितवै चितलाये।
जानकिजीवन जाने बिना जन ऐसेउ जीव न जीवत जाये ४५
कृशगात ललात जो रोटिन को घरबात खरी खुरपा खरिया।
तिन सोने के मेरु से ढेर लहे मन तौ न भरचो घर पै भरिया॥
तुलसी दुखदूनो दशा दुहुँ देखि कियो मुख दारिद को करिया।
तजि आस भो दास रघूपति को दशरत्थके दानिदया दरिया ४६
को भरिहै हरिके रितये रितवै पुनि को हरि जो भरिहै।
उथपै तेहि को जेहि राम थपै थपिहै तेहिको हरि जो टरिहै॥
तुलसी यह जानि हिये अपने स्वपने नहिं कालहु से डरिहै।
कुमया कछु हानि न औरनकी जोपै जानकीनाथ कृपा करिहै ४७
ब्याल कराल महाबिष पावक मत्त गयन्दन के रद तोरे।
शासति शङ्क चली डरपै हुते किङ्कर ते करणी मुख मोरे॥
नेकु बिषाद नहीं प्रहलादहि कारणकेहरि केवल होरे।
कौनकी त्रास करै तुलसी जोपै राखिहैं राम तौ मारिहै कोरे ४८
कृपा जेहिकी कुछ काज नहीं न अकाज कछू जेहिके मुख मोरे।
करै तिनकी परवाहि को जाहि बिषान न पूंछ फिरै दिन दोरे॥
तुलसी जेहि के रघुबीर से नाथ समर्थ सो सेवत रीझत थोरे।
कहा भवभीर परी तेहि धौं बिचरै धरणी तिनसों तृण तोरे ४९
कानन भूधर बारि बयारि महाबिष ब्याधि दवा अरिघेरे।

सङ्कट कोटि जहां तुलसी सुत मात पिता हित बन्धु न नेरे ॥
राखिहैं राम कृपालु तहां हनुमान से सेवकहैं जेहिकेरे ।
नाक रसातल भूतल में रघुनायक एक सहायक मेरे ५०
जो यमराज रजायसुते मोहिं लै चलिहैं भट बांधि नटैया ।
तात न मात न स्वामि सखा सुत बन्धु बिशाल बिपत्ति बटैया ॥
शासति घोर पुकारत आरत कौन सुनै चहुँओर डटैया ।
एक कृपालु तहां तुलसी दशरत्थ के नन्दन बन्दि कटैया ५१
जहँ है यमयातन घोरनदी भट कोटि जलच्चर दन्त टेवैया ।
जहँ धार भयङ्कर वार न पार न बोहित नाव न मीत खेवैया ॥
तुलसी जहँ मातु पिता न सखा नहिं कोऊ कहूं अवलम्ब देवैया ।
तहँहैं बिनुकारण राम कृपालु बिशाल भुजा गहि काढ़ि लेवैया ५२
जहँवां हित स्वामि न सङ्ग सखा बनिता सुत बन्धु न बाप न मैया ।
नहिं काय गिरा मनके जनके अपराध सबै कुलकानि च्मैया ॥
तुलसी तेहि काल कृपालु बिना दुजो कौन है दारुण दुःख दमैया ।
सु जहां सब सङ्कट दुर्घट शोच तहां मेरो साहब राखै रमैया ५३
तापस को बरदायक देव सबै पुनि बैर बढ़ावत बाढ़े ।
थोरेही कोप कृपा पुनि थोरेही बैठिकै जोरत तोरत ठाढ़े ॥
ठोंकि बजाय लियो गजराज कहांलौं कहौं केहिसों रद काढ़े ।
आरत के हित नाथ अनाथ के रामसहाय सही दिनगाढ़े ५४
जप योग बिराग महामख साधन दान दया दम कोटि करै ।
मुनि सिद्ध सुरेश महेश गणेश से सेवत जन्म अनेक मरै ॥

निगमागम ज्ञान पुराण पढ़ै तपसानल में युगपुंज जरै।
मनसों प्रण रोपि कहै तुलसी रघुनाथ बिना दुख कौन हरै ५५
पातकपीन कुदारिद दीन मलीन धरै कथरी करवाहै।
लोक कहै बिधिहूं न लिख्यो स्वपनेहु नहीं अपने बरवाहै॥
रामको किंकर सो तुलसी समुझै ही भलो कहबो न रवाहै।
ऐसो को ऐसो भयो कबहूं न भजे बिनु बानरको चरवाहै ५६
मात पिता जग जाय तज्यो बिधिहूँ न लिख्यो कछु भाल भलाई।
नीच निरादर भाजन कादर कूकुर टूकन लागि ललाई॥
राम स्वभाव सुन्यो तुलसी प्रभुसों कह्यो बारक पेट खलाई।
स्वारथ को परमारथको रघुनाथ सो साहेब खोरि न लाई ५७
पाप हरै परिताप हरै तनु पूजिभो हीतल शीतलताई।
हंस कियो बकते बलिजाउँ कहांलौं कहौं करुणा अधिकाई॥
काल बिलोकि कहै तुलसी मन मैं प्रभुकी परतीति अघाई।
जन्म जहां तहँ रावरे सों निबहै भरि देह सनेह सगाई ५८
लोग कहैं अरु हौंहूं कहूं जन खोटो खरो रघुनायकहीको।
रावरी राम बड़ी लघुता यश मेरो भयो सुखदायकही को॥
कै यह हानि सहौ बलिजाउँ कि मोहूं करो निज लायकहीको।
आनि हिये हित जानि करो ज्यों हौं ध्यानधरौं धनुशायकहीको ५९
आपुहि आपु को नीकेकै जानत रावरो राम बढ़ायो गढ़ायो।
कीरज्यों नाम रटै तुलसी सो कहै जग जानकिनाथ पढ़ायो॥
सोइ है खेद जो बेद कहै न घटै जन जो रघुबीर बढ़ायो।

हौंतौ सदा खरको असवार तिहारेई नाम गयन्द चढ़ायो ६०

घनाक्षरी

छारते सँवारिकै पहारहूते भारी कियो गारो भयो पांच में पुनीत पच्छ पाइकै। हौंतौ जैसो तब तैसो अब अधमाई कैकै भरों पेट राम रावरोई गुण गाइकै॥ आपने निवाजे कीपै कीजै लाज महाराज मेरी ओर हेरिकै न बैठिये रिसाइकै। पालिकै कृपाल ब्याल बालको न मारिये औ काटिये न नाथ बिषहूको रूख लाइकै ६१ बेद न पुरान गान जानौं ना बिज्ञानज्ञान ध्यान धारना समाधि साधन प्रवीनता। नाहिंन बिराग योग याग भोग तुलसी के दया दान दूबरोहौं पापही की पीनता॥ लोभ मोह काम कोह दोषकोष मोसों कौन कलिहू जो सिखिलई मेरिये मलीनता। एकही भरोसो राम रावरो कहावतहौं रावरे दयालु दीन-बन्धु मेरी दीनता ६२ रावरो कहावों गुणगावों राम रावरोई रोटी द्वैहौं पावों राम रावरीहिं कानिहौं। जानत जहान मन मेरेहू गुमान बड़ो मान्यों मैं न दूसरो न मानत न मानिहौं॥ पांचकी प्रतीति ना भरोसो मोहिं आपनोई तुम अपनाइहौ तबहिं परिजानिहौं। गढ़ि गूढ़ि छोलि छालि कुंद कैसी भाईं बातैं जैसी मुख कहौं तैसी जीय जब आनि-

हौं ६३ बचन बिकार बहु करत खुवार मन बिगत बिचार कलिमल को निधानु है। राम को कहाइ नाम बेचि बेचि खाइ सेवा सङ्गति न जाइ पाछिले को उपखानु है॥ तेहू तुलसी को लोग भलीभला कहै ताको दूसरो न हेतु एक नीके को निदानु है। लोक रीति बिदित बिलोकियत जहाँ तहाँ स्वामि के सनेह श्वानहू को सनमानु है ६४ स्वारथ को साज न समाज परमारथको मोसों दगाबाज दूसरो न जगजाल है। कै न आयों करौं न करौंगो करतूति भली लिखी ना बिरञ्चिहू भलाई भूलि भाल है॥ रावरी शपथ रामनामही की गति मेरे इहां झूठो झूठो सो त्रिलोक तिहुँकाल है। तुलसी को भलोपै तुम्हारेही किये कृपालु कीजै ना बिलम्ब बलि पानी भरी खाल है ६५ रागको न साज न बिराग योग याग जिय कायर न छांड़िदेत ठाटिबो कुठाटको। मनोराज करत अकाज भयो आजु लगि चाहे चारु चीरपै लहै न टूक टाटको॥ कियो करतार बड़े क्रूर को कृपालु अति पायों नाम पारस हौं लालची बराटको। तुलसी बनीहै राम रावरे बनाई नतो धोबी कैसो कूकुर न घरको न घाटको ६६ ऊंचो मन ऊंची रुचि भाग नीचो निपटहि लोकरीति लायक न लंगर लबार है। स्वारथ

अगम परमारथकी कहां चली पेटकी कठिन जग जीवको जवार है ॥ चाकरी न आकरी न खेती न बनिज भीख जानत न क्रूर कछु किसिम कबार है। तुलसीकी बाजी राखी रामही के नाम नतो भेट पितरनसों न मुराडहू में बार है ६७ अपत उतार अपकार को अगार जग जाके छाँह छुये सहमत ब्याध बाघ को। पातक पुहुमि पालिबे को सहसाननसो कानन कपटको पयोधि अपराधको ॥ तुलसी से बामको भो दाहिनो दयानिधान सुनत सिहात सब सिद्धसाध साधको। रामनाम ललित ललाम किये लाखन को बड़ो क्रर कायर कपूत कौड़ी आधको ६८ सब अङ्गहीन सब साधन बिहीन मन बचन मलीन हीन कुल करतूतिहौं। बुद्धि बलहीन भाव भगति बिहीन दीन गुण ज्ञान हीन हीन भागहूं बिभूतिहौं॥ तुलसी गरीबकी गई बहोर राम नाम जाहि जपि जीह रामहूं को बैठो धूतिहौं। प्रीति राम नाम से प्रतीति राम नाम की प्रसाद रामनाम के पसारि पाँय सूतिहौं ६९ मेरे जानि जबते हौं जीव है जनम्यों जग तबते बेसाह्यो दाम लोह कोह कामको। मन तिनहीं को सेव तिनहीं सो भाव नीको बचन बनाइ कहौं हौं गुलाम रामको ॥ नाथहू न अपनायो लोक झूठी है परीपै प्रभुहूते प्रबल प्रताप प्रभु

नामको। आपनी भलाई भलो कीजै तो भलोई नतो तुलसी को खुलैगो खजानो खोटे दाम को ७० योग न बिराग जप याग तपत्याग ब्रत तीरथ न धर्म जानों बेदबिधि किमि है। तुलसी सों पोच न भयो है नहिं ह्वै है कहूं शोचैं सब याके अघ कैसे प्रभु क्षमि है॥ मेरे तौ न डर रघुबीर सुनो सांची कहौं खल अनखैहैं तुम्हैं सज्जननि गमि है। भले सुकृती के सङ्ग मोहिं तुला तौलिये तौ नामके प्रसाद भार मेरी ओर नमि है ७१ जातिके सुजाति के कुजाति के पेटागिबश खाये टूक सबके बिदित बात दुनीसो। मानस बचन काय किये पाप सतिभाय रामको कहाय दास दगा-बाज पुनीसो॥ रामनामको प्रभाव बाउ महिमाप्रताप तुलसीसों जग मानियत महासुनीसो। अतिही अभागो अनुरागत न रामपद मूढ़ येते बड़ो अचरज देखि सुनीसो ७२ जायो कुलमंगन बधावो ना बजायो सुनि भयो परिताप पाप जननी जनकको। बारेते ललात बिललात द्वारद्वार दीन जानत हौं चारिफल चारिहि चनकको॥ तुलसी सो साहिब समर्थको सुसेवकहि सुनत सिहात शोच बिधिहू गनकको। नाम राम रावरो सयानो किधौं बावरो जो करत गिरी ते गरू तृणते तनकको ७३ बेदहू पुराण कही लोकहू

बिलोकियत रामनामही सों रीझै सकल भलाई है। काशिहू मरत उपदेशत महेश सोई साधन अनेक चितई न चितलाई है॥ छांछिको ललात जेते रामनाम के प्रसाद खात खुनसात सोंधे दूध की मलाई है। रामराज सुनियत राजनीति की अवधि नाम राम रावरे तो चामकी चलाई है ७४ शोच संकटानि शोच सङ्कट परत जर जरत प्रभाउ नाम ललित ललाम को। बूड़ियो तरत बिगरीयो सुधरति बात होत देखि दाहिनो स्वभाव बिधि बाम को॥ भागत अभाग अनुराग सुबिराग भाग जागत अलस तुलसीहू से निकाम को। धाइ धरि फिरिकै गोहारि हितकारी होत आई मीच मिटत जपत रामनाम को ७५ आंधरो अधम जड़ जांजरो जरा जमन शूकर के सावकढका ढकेलो मग में। गिस्यो हिये हहरि हराम को हराम हन्यो हाइहाइ करत परीगो कालफँग में॥ तुलसी बिशोक ह्वै त्रिलोकपति लोक गयो नामके प्रताप बात बिदितहै जगमें। सोई रामनाम जो सनेह सों जपत जन ताकी महिमा को क्यों कहीहै जात अगमें ७६ जपको न तप खप कियो न तमाई योग याग न बिराग त्याग तीरथ न तनको। भाई को भरोसो न खरोसो बैर बैरीहू सों बल अपनो न हित जननी जनक को॥ लोक को न डर पर-

लोकको न शोच देव सेवा न सहाय गर्ब धामको न धनको। रामही के नाम ते जो होइ सोइ नीको लागै ऐसोई स्वभाव कछु तुलसी के मन को ७७ ईश न गणेश न दिनेश न धनेश न सुरेश सुर गौरि गिरापति नहिं जपने। तुम्हरोई नाम को भरोसो भव तरिबे को बैठे उठे जागत बागत सुख सपने ॥ तुलसी है बावरो सो रावरोई रावरी सों रावरे हू जानि जिय कीजियै जु अपने। जानकी जीवन मेरे रावरे बदनफेरे ठाउँ न समाउँ कहुँ सकल निरपने ७८ जाहिर जहानमें जमानो एक भांति भयो बेंचिये बिबुध धेनु रासभी बेसाहिये। ऐसेउ कराल कलिकालमें कृपालु तेरे नाम के प्रताप न त्रिताप तन दाहिये। तुलसी तिहारो मन बचन करम जन येहू नातो नेह निज ओर ते निबाहिये। रङ्क के निवाज रघुराज राजा राजनके उमिरि दराज महाराज तेरी चाहिये ७९ स्वारथ सयानप प्रपंच परमारथ कहायो राम रावरो हौं जानत जहान है। नाम के प्रताप बाप आजलौं निबाही नीकी आगे को गोसांई स्वामी सबल सुजान है॥ कलिकी कुचालि देखि दिन दिन दूनी देव पाहरूई चोरहेरि हिय हहरान है। तुलसी की बलि बारबारहीं सम्हारकीबी यद्यपि कृपानिधान सदा सावधान है ८० दिन दिन दूनी

देखि दारिद दुकाल दुख दुरित दुराज सुख सुकृत सकोच है। मांगे पै तपावत प्रचारि पातकी प्रचण्ड कालकी करालता भले को होत पोच है॥ आपने तो एक अवलम्ब अम्ब डिंभयौ समर्थ सीतानाथ सब संकट बिमोच है। तुलसी को साहस सराहिये कृपालुराम नामके भरोसे परिनाम को निशोचहै ८१ मोहमद मातो रातो कुमति कुनारि सो बिसारि बेद लोकलाज आकरो अचेत है। भावै सो करत मुख आवै सो कहत कछु काहूकी सहत नाहिं सरकस हेत है॥ तुलसी अधिक अधमाईहू अजामिल ते ताहू में सहाय कलि कपट निकेत है। जैबेकी अनेक टेक एक टेक ह्वैबेकी सो पेट प्रिय पूतहित रामनाम लेत है ८२ जागिये न सोइये बिगोइये जनम जाइ दिन दुख रोइये कलेश कोह कामको। राजा रङ्क रागी औ बिरागी भूरि भागी ये अभागी जीव जरत प्रभाव कलिबाम को॥ तुलसी कबन्ध कैसो धाइबो बिचारु अन्ध धन्ध देखियत जग शोच परिणामको। सोइबो जो रामके सनेह की समाधि सुख जागिबो जो जीहजपै नीके राम नामको ८३ बरन धरम गयो आश्रम निवास तज्यो त्रास न चकित सो परावनो परोसो है। परम उपासना कुबासना बिनाशो ज्ञान बचन बिराग बेष जगत हरोसो

है ॥ गोरख जगायो योग भगति भगायो लोग निगम
नियोग ते सो कलिहि छरो सो है। काय मन बचन सुभाय
तुलसी है जाहि रामनामको भरोसो ताहीको भरोसो है ८४

सवैया

बेद पुराण बिहाइ सुपन्थ कुमारग कोटि कुचाल चली है।
कालकराल नृपाल कृपाल न राजसमाज बड़ोइ छली है॥
वर्ण बिभाग न आश्रमधर्म्म दुनी दुख दोष दरिद्र दली है।
स्वारथको परमारथको कलि रामको नाम प्रताप बली है ८५
न मिटै भवसंकट दुर्घट है तप तीरथ जन्म अनेक अटौ।
कलिमें न बिराग न ज्ञान कहूँ सब लागत फोकट झूठजटौ॥
नटज्यों जनि पेट कुपेटक कोटिक चेटक कौतुक ठाट ठटौ।
तुलसी जो सदा सुख चाहिये तो रसना निशिबासर रामरटौ ८६
दम दुर्गम दान दया मख कर्म सुधर्म्म अधीन सबै धनको।
तप तीरथ साधन योग बिराग सो होई नहीं दृढ़ता तनको॥
कलिकाल कराल में रामकृपाल इहै अवलम्ब बड़ो मनको।
तुलसी सब संयमहीन सबै यकनाम अधार सदा जनको ८७
पाइ सुदेह बिमोह नदी तरणी न लही करणी न कछूकी।
रामकथा बरणी न बनाइ सुनी न कथा प्रहाद न ध्रूकी॥
जोर जरा जरिगात गयो मनमानि गलानि कुबानि न मूकी।
नीके कै ठीकदई तुलसी अवलम्ब बड़ी उर आखर दूकी ८८

रामबिहाइ मरा जपते बिगरी सुधरी कबि कोकिलहूकी।
नामहि ते गजकी गणिकाहु अजामिलकी चलिगै चलचूकी॥
राम प्रताप बड़े कुसमाज बजाइ रही पति पाण्डुबधूकी।
ताको भलो अजहूँ तुलसी जेहि प्रीति प्रतीतिहै आखर दूकी ८९
नाम अजामिल से खलतारण तारण बारण बारबधूको।
नाम हरे प्रह्लाद बिषाद पिता भय शासति सागर सूको॥
नामसों प्रीति प्रतीति बिहीन गिलो कलिकाल कराल न चूको।
राखिहैं राम सो जासु हिये तुलसी हुलसै बल आखर दूको ९०

घनाक्षरी

खेती न किसानको भिखारीको न भीख बलि बणिकको बणिज न चाकर को चाकरी। जीविकाबिहीन लोग बिद्य-मान शोचबश कहैं एक एकन सों कहां जाइ काकरी॥ बेदहू पुराण कही लोकहू बिलोकियत सांकरे सबै को राम रावरे कृपा करी। दारिद दशानन दबाईदुनी दीनबन्धु दुरित दहत देखि तुलसी हहा करी ९१ कुलकरतूति भूति कीरति सरूप गुण यौबन जरत ज्वर परै न कछु कही। राजकाज सुपथ कुसाज भोग रोगहीके बेद बुध बिद्यापाइ बिबश बलकही॥ गति तुलसीशकी लखत नहिं जो तुरत पबिते करत क्षार पबि सो पलकही। कासों कीजै रोष दोष दीजै काहि पाहि राम कियो कालिकाल कुलि खलल खलकही ९२ बबुर बहेरे

को बनाइ बाग लाइयत रूँधिबे को सोऊ सुरतरु काटियत है। गारी देत नीच हरिचंदहू दधीचिहूको आपने चना चबाइ हाथ चाटियतहै ॥ आपु महापातकी हँसत हरिहरहूको आपुहैं अभागी भूरिभागी डाटियत है। कलिकी कलुषमन मलिन किये महत मशककी पांसुरी पयोधि पाटियतहै ६३ सुनिये कराल कलिकाल भूमिपाल तुम जाहि घालो चाहिये कहोधौं राखै ताहि को। हौं तो दीन दूबरो बिगारों ढारों रावरो न मैं हूँ तैं हूँ ताहिको सकलजग जाहि को ॥ कामको हलाइकै देखाइयत आँखि मोहि येते मान अकस कीबे को आपु आहिको। साहिब सुजान जिन श्वानहू को पक्ष कियो राम बोलानाम हौं गुलाम राम साहिको ६४

सवैया

सांची कहौं कलिकाल कराल में ढारो बिगारो तिहारो कहा है।
काम को लोभ को क्रोधको मोहको मोहीं सो आनि प्रपञ्च रहा है॥
हौ जगनायक लायक आजु पै मेरियो देव कुटेव महा है।
जानकीनाथ बिना तुलसी जग दूसरे सों करिहौं न हहा है ६५
भागीरथी जल पान करौं अरु नाम है राम के लेत नितैहौं।
मोसों न लेनो न देनो कछू कलिभूलि न रावरी ओर चितैहौं॥
जानिकै जोरि करों परिणाम तुम्हैं पछितैहौ पै मैं न भितैहौं।
ब्राह्मण ज्यों उगिल्यो उरगारि हौं त्योंहीं तिहारे हिये न हितैहौं ६६

राज मराल के बालक पेलिकै पालत लालत खूसर को ॥
शुचि सुन्दर सालि सकेलि सँवारिकै बीज बटोरत ऊसर को ॥
गुण ज्ञान गुमान भभेरि बड़ो कल्पद्रुम काटत मूसर को ।
कलिकाल बिचार अचार हरी नहिं सूझै कछू धमधूसर को ६७
कीबे कहा पढ़िबे को कहा फल बूझि न बेदको भेद बिचार्यो ।
स्वारथ को परमारथको कलिकामद रामको नाम बिसार्यो ॥
बाद बिबाद बिषाद बढ़ाइकै छाती पराइ औ आपनि जार्यो ।
चारिहू को छहुको नवको दश आठ को पाठ कुकाठ ज्यों फार्यो ६८
आगम बेद पुराण बखानत कोटिक मारग जाहि न जाने ।
जे मुनि ते पुनि आपुहि आपु को ईश कहावत सिद्ध सयाने ॥
धर्म सबै कलिकाल ग्रसे जप योग बिराग लै जीव पराने ।
को करि शोच मरै तुलसी हम जानकिनाथ के हाथ बिकाने ६९
धूत कहौ अवधूत कहौ रजपूत कहौ जोलहा कहौ कोऊ ।
काहू के बेटी सों बेटा न ब्याहिहौं काहूकी जात बिगारन सोऊ ॥
तुलसी सरनाम गुलाम है रामको जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ ।
मांगि कै खैबो मजीतको सोइबो लेबे को एक न देबे को दोऊ १००

घनाक्षरी

मेरे जाति पांति न चहौं काहू की जाति पांति मेरे कोऊ कामको न हौं काहू के काम को । लोक परलोक रघुनाथही के हाथ सब भारी है भरोसो तुलसी के एक नाम को ॥

अतिही अयाने उपखाने नहिं बूझैं लोग साहेब को गोत गोत होत है गुलाम को । साधुकै असाधु कै भलौ कै पोच शोच कहा का काहू के द्वार पर्यो जोहौं सो हौं राम को १०१ कोऊ कहै करत कुसाज दगाबाज बड़ो कोऊ कहै राम को गुलाम खरो खूब है । साधु जानै महासाधु खल जानै महाखल बानी झूठी साँची कोटि उठति हबूब है ॥ चहत न काहू सों कहत न काहू को कछु सबकी सहत उर अन्तर न ऊब है । तुलसी को भलो पोच हाथ रघुनाथही के रामकी भगति भूमि मेरी मति दूब है १०२ जागैं योगी जंगम जती जमाति ध्यान धरैं डरैं डरभारी लोभ मोह कोह काम के । जागैं राजा राजकाज सेवक समाज साज सोचैं सुनि समाचार बड़े बैरी बाम के ॥ जागैं बुध बिद्या हित पण्डित चकित चित जागैं लोभी लालच धरणि धन धाम कें । जागैं भोगी भोगहि बियोगी रोगी रोगवश सोवै सुख तुलसी भरोसे एक रामके १०३

छप्पय

राम मातु पितु बन्धु सुजन गुरु पूज्य परम हित ।
साहेब सखा सहाइ नेह नातो पुनीत चित ॥
देश कोश कुल कर्म धर्म धन धाम धरणि गति ।

जाति पाँति सब भाँति लागि रामहिं हमारि मति ॥
परमारथ स्वारथ सुयश सुलभ रामते सकल फल ।
तुलसिदास अब जब कबहुँ एक राम ते मोर भल १०४
महाराज बलि जाउँ राम सेवक सुखदायक ।
महाराज बलि जाउँ राम सुन्दर सब लायक ॥
महाराज बलि जाउँ राम सब सङ्कटमोचन ।
महाराज बलि जाउँ राम राजीवबिलोचन ॥
बलि जाउँ राम करुणायतन प्रणतपाल पातकहरण ।
बलि जाउँ राम कलिभय बिकल तुलसिदास राखिय शरण १०५
जय ताड़का सुबाहु मथन मारीच मानहर ।
मुनिमख रक्षण दक्ष शिला तारण करुणाकर ॥
नृप गण बल मद सहित शम्भु कोदण्ड बिहण्डन ।
जय कुठारधर दर्प दलन दिनकर कुल मण्डन ॥
जय जनक नगर आनन्दप्रद सुखसागर सुषमाभवन ।
कहै तुलसिदास सुरमुकुटमणि जय जय जय जानकिरमन १०६
जय जयन्त जयकर अनन्त सज्जन जन रञ्जन ।
जय बिराधबधबिदुष बिबुध मुनिगण भय भञ्जन ॥
जय निशिचरी बिरूप करन रघुबंश बिभूषण ।
सुभट चतुर्दश सहस दलन त्रिशिरा खर दूषण ॥
जय दण्डक बन पावन करन तुलसिदास संशय शमन ।
जग बिदित जगतमणि जयति जय जय जय जय जानकिरमन १०७

जय माया मृग मथन गीध शबरी उद्धारण।
जय कबन्ध सूदन बिशाल तरु ताल बिदारण॥
दवन बालि बल शालि थपन सुग्रीव सन्त हित।
कपि कराल भट भालु कटक पालक कृपाल चित॥
जय सिय बियोग दुख हेतु कृत सेतुबन्ध बारिधि दमन।
दशशीश बिभीषण अभयप्रद जयजयजय जानकिरमन १०८
कनक कुधर केदार बीज सुन्दर सुर मुनिबर।
सींचि कामधुक धेनु सुधामय पय बिशुद्ध तर॥
तीरथपति अंकुर स्वरूप यत्तेश रत्त तेहि।
मरकत मणि शाखा सुपत्र मञ्जरी सुलत्ति जेहि॥
कैवल्य सकल फल कल्पतरु शुभ सुभाव सब सुख बरिस।
कहै तुलसिदास रघुवंशमणि तौकि होहि तव कर सरिस १०९
जाइ सो सुभट समर्थ पाइ रण रारि न मण्डै।
जाइ सो यती कहाइ बिषय बासना न छण्डै॥
जाइ धनिक बिनु दान जाइ निर्धन बिनु धर्महि।
जाइ सो पंडित पढ़ि पुराण जो रत न सुकर्महि॥
सुत जाइ मातु पितु भक्ति बिनु तिय सो जाइ जेहि पति न हित।
सबजाइँ दास तुलसी कहै जो न राम पद नेह नित ११०
को न क्रोध निर्दह्यो कामवश केहि नहिं कीन्हों।
को न लोभ दृढ़ फन्द बाँधि त्रासन करि दीन्हों॥
कवन हृदय नहिं लाग कठिन अति नारिनयन शर।

लोचनयुत नहिं भयउ अन्ध श्री पाइ कवन नर ॥
सुर नागलोक महि मण्डलहु को जु मोह कीन्हो जय न।
कहै तुलसिदास सो ऊबरै जेहि राखु राम राजिवनयन १११

सवैया

भौंह कमान सँधान सुठान जो नारि बिलोकनि बाण ते बांचे।
कोप कृशानु गुमान अवांघट ज्यों जिनके मन आंच न आंचे ॥
लोभ सबै नटके बश ह्वै कपि ज्यों जग में बहु नाच न नाचे।
नीके हैं साधु सबै तुलसी पै तेई रघुबीरके सेवक सांचे ११२

घनाक्षरी

बेष सुबनाय भले बचन कहै चुवाय जाय तौ न जरनि धरनि धन धाम की। कोटिक उपाय करि लालि पालियत देह मुख कहियत गति रामहीके नाम की ॥ प्रकटै उपासना दुरावै दुर्बासनाहिं मानस निवासभूमि लोभ मोह कामकी। राग रोष ईर्षा कपट कुटिलाई भरे तुलसी से भगत भगति चाहैं रामकी ११३ काल्हिही तरुणतन काल्हिही धरणि धन काल्हिही जितौंगो रण कहत कुचालि है। काल्हिही साधौंगो काज काल्हिही राजा समाज मोसों कोऊ कहा भारे मही मेरु हालि है ॥ तुलसी यही कुभांति घने घर घालि आये घने घर घालतहै घने घर घालिहै। देखत सुनत समुझ- तहू न सूझै सोई कबहूँ कह्यो न कालहूको काल काल्हि

है ११४ भयो न तिकाल तिहूंलोक तुलसी सो मन्द नींदैं सब साधु सुनि मानो न सकोचहौं। जानत न योग हिय हानि मानै जानकीश काहेको परेखोहौ प्रपंची पापी पोचहौं॥ पेट भरिबे के काज महाराज को कहायो महाराजहू कह्यो है प्रणत बिमोचहौं। निज अघजाल कलिकालकी करालता बिलोकि होत ब्याकुल करत सोई शोच हौं ११५ धरम को सेतु जग जङ्गम को हेतु भूमिभार हरिबे को अवतार लियो नरको। नीति औ प्रतीति प्रीतिपाल चालि प्रभु मान लोक बेद राखिबे को प्रण रघुबरको॥ बानर बिभीषणकी ओर को कनावड़ो है सो प्रसङ्ग सुने अङ्ग जरै अनुचरको। राखे रीति आपनी जो होइ सोई कीजै बलि तुलसी तिहारो घर-जाइ वाही घरको ११६ नाम महाराज के निबाही नीकी कीजै उर सबही सोहात मैं न लोगन सोहातहौं। कीजै राम बार यहि मेरी ओर चषकोर ताहिलागि रंक ज्यों सनेहको ललातहौं॥ तुलसी बिलोकि कलिकालकी करालता कृपा-लको सुभाव समुझत सकुचातहौं। लोक एकभाँति को त्रिलोकनाथ लोकबश आपनो न शोच स्वामी शोचही सुखातहौं ११७ तौलौं लोभ लोलुप ललात लालची लबार बारबार लालच धरणि धन धामको। तबलौं बियोग रोग

शोग भोग यातना के युग सम लागत जीवन यामयामको ॥ तौलौं दुख दारिद दहत अति नित तन तुलसी है किङ्कर बिमोह कोह कामको । सब दुख आपने निरापने सकल सुख जौलौं जन भयो न बजाइ राजारामको ११८ तबलौं मलीन हीन दीन सुख सपने न जहाँ तहाँ दुखी जन भाजन कलेशको । तबलौं उबैन पाय फिरत पेटौ खलाय बाये मुँह सहत पराभौ देशदेशको ॥ तबलौं दयावनो दुसह दुख दारिदको साथरी को सोइबो ओढ़िबो भूने खेशको । जबलौं न भजै जीह जानकी जीवन राम राजनको राजा सोतो साहेब महेशको ११९ ईशनके ईश महाराजन के महाराज देवन के देव देव प्रानहूं के प्रानहौ । कालहूके काल महाभूतन के महाभूत कर्महू के करम निदानके निदानहौ ॥ निगमको अगम सुगम तुलसीहूसे को एते मान शीलसिन्धु करुणानिधानहौ । महिमा अपार काहू बोलको न वारापार बड़ी साहिबी में नाथ बड़े सावधानहौ १२०

सवैया

आरतपाल कृपाल जोराम जेही सुमिरे तेहिको तहँ ठाढ़े ।
नाम प्रताप महा महिमा अँकरे किये खोटेउ छोटेउ बाढ़े ॥
सेवक एकते एक अनेक भये तुलसी तिहूं ताप न डाढ़े ।

प्रेमबदौं प्रह्लादहि को जिन पाहन ते परमेश्वर काढ़े १२१
काढ़ि कृपान कृपा न कहूं पितुकाल कराल बिलोकि न भागे ।
राम कहां सबठाउँ हैं खम्भ में हां सुनि हांक नृकेहरि जागे ॥
बैरी बिदारि भये बिकराल कहै प्रह्लादहि के अनुरागे ।
प्रीति प्रतीति बढ़ी तुलसी तबते सब पाहन पूजन लागे १२२
अन्तर्य्यामिहुते बड़े बाहेर जामि हैं राम जे नाम लिये ते ।
धावत धेनु पन्हाइ लवाइ ज्यों बालक बोलनि कान किये ते ॥
आपनि बूझि कहै तुलसी कहिबे की न बावरि बात बिये ते ।
पैजु पुरे प्रह्लादहु को प्रकटे प्रभु पाहन ते न हिये ते १२३
बालक बोलि दियो बलि काल को कायर कोटि कुचाल चलाई ।
पापी है बाप बड़े परिताप ते आपनी ओर ते खोरि न लाई ॥
भूरि दई बिष मूरि भई प्रह्लाद सुधाई सुधाकी मलाई
राम कृपा तुलसी जनको जग होत भलेको भलोई भलाई १२४
कंस करी ब्रजबासिन पै करतूति कुभाँति चली न चलाई ।
पांडु के पूत सपूत कपूत सुयोधनभो कलि छोटो छलाई ॥
कान्ह कृपाल बड़े नतपाल गये खल खेचर खीस खलाई ।
ठीक प्रतीति कहै तुलसी जग होई भले को भलोई भलाई १२५
अवनीश अनेक भये अवनी जिनके डरते सुर शोच सुखाहीं ।
मानव दानव देव सतावन रावन घाटि रच्यो जगमाहीं ॥
ते मिलये धरि धूरि सुयोधन जे चलते बहु छत्र कि छाहीं ।
बेद पुरान कहै जगजान गुमान गोबिंदहि भावत नाहीं १२६

जब नैनन प्रीति ठई ठग श्यामासों स्यानी सखी हठिहौं बरजी।
नहिं जानो बियोग सुरोग है आगे झुकी तबहूं तेहि सों तरजी॥
अब देह भई पट नेह के घाले सो ब्योंत करै बिरहादरजी।
ब्रजराजकुमार बिना सुनुभृङ्ग अनङ्ग भयो जिय को गरजी १२७
योगकथा पठई ब्रजको सब सो शठचेरी की चाल चलाकी।
ऊधोजू कौन कहै कुबरी जो बरी नटनागर हेरिहलाकी॥
जाहि लगै परि जानै सोई तुलसी सो सोहागिनि नन्दललाकी।
जानीहैं जानपनी हरिकी अब बांधियेगी कछु मोट कलाकी १२८

घनाक्षरी

पठयो है छपद छबीले कान्ह केहू कहूं खोजिकै खवास खासो कूबरी सी बालको। ज्ञानको गढ़ैया बिनु गिराको पढ़ैया बार खालको कढ़ैया सो बढ़ैया उरशाल को॥ प्रीति को बधिक रसरीति के अधिक नीति निपुण बिबेकहै निदेश देशकालको। तुलसी कहे न बनै सहेही बनैगी सब योग भयो योगको बियोग नन्दलालको १२९ हनुमान ह्वै कृपाल लाड़िले लषणलाल भावते भरत कीजै सेवक सहायजू। बिनती करत दीन दूबरो दयावनो सो बिगरे ते आपुही सुधारिलीजै भायजू॥ मेरी साहिबिनी सदाशीशपर बिलसति देबी क्यों न दास को देखाइयत पायजू। खीझहूमें रीझिबे की बानि राम रीझतहैं रीझेह्वै हैं रामकी दोहाई रघुरायजू १३०

सवैया

बेष बिराग को राग भरो मन माय कहौं सतिभावहौं तोसों।
तेरेहीनाथ को नाम लै बेंचिहौं पातकी पामर प्राणनि पोसों॥
येते बड़े अपराधी अघीकहँ तैंकहुँ अम्बकि मेरो तू मोसों।
स्वारथको परमारथ को परिपूरण भो फिरि घाटि न हो सों १३१

घनाक्षरी

जहाँ बालमीकि भये ब्याधते मुनीन्द्र साधु मरामरा जपे सिख सुनि ऋषिसातकी। सीयको निवास लव कुशको जनम थल तुलसी छुवत छांह ताप गरै गातकी॥ बिटप महीप सुरसरितसमीप सोहै सीताबट पेखत पुनीत होत पातकी। बारिपुर दिगपुर बीच बिलसति भूमि अंकित जो जानकीचरण जलजातकी १३२ मरकत बरन परन फल मानिक से लसै जटाजूट जनु रूप बेषहरु है। सुषमा को ढेरु कैधौं सुकृत सुमेरु कैधौं सम्पदा सकल मुद मंगलको घरु है॥ देत अभिमत जो समेत प्रीति सेइये प्रतीति मानि तुलसी बिचारि काको थरु है। सुरसरि निकट सोहावनी अवनि सोहै रामरमनी को बट कलि काम-तरु है १३३ देवधुनी पास मुनिबास श्रीनिवास जहां प्राकृ-तहू बट बूट बसत पुरारि हैं। योग जप याग को बिरागको

पुनीत पीठि रागिनपै सीठि दीठि बाहरी निहारि हैं ॥ आयसु आदेश बाबू भलो भलो भाव सिद्धि तुलसी बिचारि योगी कहत पुकारि हैं। रामभगतनको तो कामतरुते अधिक सीयबट सेये करतल फलचारि हैं १३४ जहां बन पावनो सुहावने बिहंग मृग देखि अतिलागत अनंद खेतखूटसो। सीता राम लषण निवासबास मुनिनको सिद्ध साधु साधक सबै बिबेक बूटसो ॥ झरना झरत झारि शीतल पुनीत बारि मंदाकिनि मंजुल महेश जटाजूटसो। तुलसी जो रामसों सनेह सांचो चाहिये तो सेइये सनेहसों बिचित्र चित्रकूट सो १३५ मोहबन कलिमल पल पीन जानि जिय साधु गाइ बिप्रनके भयको निवारि है। दीन्ही है रजाय राम पायसो सहाय लाल लषण समर्थ बीर हेरि हेरि मारि है ॥ मंदाकिनि मंजुल कमान असि बाण जहां बारिधार धीरधरि सुकर सुधारि है। चित्रकूट अचल अहेरी बैठ्यो घातमानो पातक के ब्रात घोरशावक सँहारि है १३६

सवैया

लागि दवारि पहार ढही लहकी कपिलंक यथा खरखोकी।
चारुचुवा चहुँओर चलीं लपटैं झपटैं सो तमीचर तोकी ॥
क्यों कहि जात महासुखमा उपमा तकि ताकतहैं कबि कोकी।

मानो लसी तुलसी हनुमान हिये जगजीतजरायकी चोकी १३७
देव कहैं अपनी अपनी अवलोकन तीरथराज चलोरे।
देखि मिटैं अपराध अगाध निमज्जत साधु समाज भलोरे॥
सोह सितासितको मिलिबो तुलसी हुलसै हियहेरि हलोरे।
मानो हरे तृण चारुचरैं बगरैं सुरधेनुके धौल कलोरे १३८
देवनदीकहँ जो जन जान किये मनसा कुल कोटि उधारे।
देखि चलैं भगरैं सुरनारि सुरेश बनाइ बिमान सँवारे॥
पूजाको साज बिरंचि रचैं तुलसी जे महातम जाननहारे।
ओककी नीव परी हरिलोक बिलोकत गंग तरंग तिहारे १३९
ब्रह्म जो ब्यापक बेद कहै गमनाहिं गिरा गुण ज्ञान गुनी को।
जो करता भरता हरता सुरराइ सुसाहिब दीनदुनी को॥
सोई भयो द्रवरूप सही जोहै नाथ बिरंचि महेश मुनी को।
मानि प्रतीति सदा तुलसी जल काहे न सेवत देवधुनी को १४०
बारि तिहारो निहारि मुरारि भये परसे पद पाप लहौंगो॥
ईशह्वै शीश धरौंपै डरौं प्रभुकी समता बड़दोष दहौंगो।
बरु बारहिबार शरीर धरौं रघुबीर को ह्वै तवतीर रहौंगो।
भागीरथी बिनवौं करजोरि बहोरि न खोरि लगै सो कहौंगो १४१

घनाक्षरी

लालचीललात बिललात द्वारद्वार दीनबदन मलनि मन
मिटै न बिसूरना। ताकत सराधकै बिवाह कै उछाह कछु

डोलै लोल बूझत शबद ढोल तूरना ॥ प्यासे न पावहिं बारि भूखे न चनक चारि चहत अहारते पहार डारि धूरना। शोक को अगार दुखभारभरो तौ लौं जन जौलौं देवी द्रवै न भवानी अन्नपूरना १४२

छप्पय

भसमअंग मर्दन अनंग संतत असंग हर।
शीशगंग गिरिजाऽर्धंग भूषण भुजंगबर ॥
मुंडमाल बिधुबाल भाल डमरू कपालकर।
बिबुधबृन्द नवकुमुदचन्द सुखकन्द शूलधर ॥
त्रिपुरारि त्रिलोचन दिग बसन बिष भोजन भव भय हरण।
कहे तुलसिदास सेवत सुलभ शिव शिव शिव शङ्करशरण १४३

गरल असन दिगबसन व्यसनभञ्जन जनरंजन।
कुन्द इन्दु कर्पूर गौर सच्चिदानन्द घन ॥
बिकट बेष उर शेष शीश सुरसरित सहज शुचि।
शिव अकाम अभिराम धाम नित रामनाम रुचि ॥
कन्दर्पदर्प दुर्गम दमन उमारमण गुणभवन हर।
त्रिपुरारि त्रिलोचन त्रिगुण पर त्रिपुर मथन जय त्रिदशबर १४४

अर्द्धांग अंगना महा नाम योगीश योगपति।
बिषम अशन दिगबसन नाम बिश्वेश बिश्वगति ॥
कर कपाल शिर माल व्याल बिष भूति बिभूषण।
नाम शुद्ध अबिरुद्ध अमर अनवद्य अदूषण ॥

विकराल भूत बैताल प्रिय भीमनाम भवभय दमन।
सब बिधि समर्थ महिमा अकत्थ तुलसिदास संशयशमन १४५

भूतनाथ भयहरण भीम भय भवन भूमिधर।
भानुमन्त भगवन्त भूतिभूषण भुजंग बर ॥
भव्य भाव बल्लभ महेश भव भार बिभञ्जन।
भूरि भाग भैरव कुयोग गंजन जनरंजन ॥
भारतीबदन बिष अदन शिव शशि पतंग पावकनयन।
कहै तुलसिदास किन भजसि मन भद्रसदन मर्दन मयन १४६

सवैया

नांगो फिरै कहै मांगनो देखि न खांगो कछू जनि मांगिये थोरे।
रांकनि नाकप रीझि करै तुलसी जग जो जुरै याचक जोरे ॥
नाक सँवारत आयो हौं नाकहि नाहिं पिनाकिहि नेकु निहोरे।
बिरञ्चि कहै गिरिजा सिखवो पति रावरो दानिहै बावरे भोरे १४७
बिष पावक ब्याल कपाल गरे शरणागत तौ तिहुँताप न डाढ़े।
भूत बैताल सखा भव नाम दलै पल मैं भव के भय गाढ़े ॥
तुलसीश दरिद्र शिरोमणि सो सुमिरे दुख दारिद होहिं न ठाढ़े।
भौनमें भांग धतूरोइ आंगन नांगे के आगे हैं मांगने बाढ़े १४८
शीश बसै बरदा बरदानि चढ़्यो बरदा धरन्यो बरदा है।
धाम धतूरो बिभूतिको कूरो निवास तहां शव लै मरदा है ॥
ब्याली कपालीहै ख्याली चहूं दिशि भांगकि टाटिन्हको परदा है।
रंकशिरोमणि काकिनिभाक बिलोकत लोकपको करदा है १४९

दानि जो चारि पदारथको त्रिपुरारि तिहूंपुरमें शिर टीको।
भोरो भलो भले भावको भूखो भलोई कियो सुमिरे तुलसीको॥
ता बिनु आशको दास भयो कबहूं न मिट्यो लघुलालच जीको।
साधो कहा करि साधनते जौपै राधो नहीं पतिपारबतीको १५०
जाते जरे सब लोक बिलोकि त्रिलोचनसो बिष लोकि लियो है।
पान कियो बिष भूषण भो करुणा बरुणालय साइँ हियो है॥
मेरोइ फोरिबे योग कपार किधौं कछु काहू लखाइ दियो है।
काहे न कान करौ बिनती तुलसी कलिकाल बिहाल कियो है १५१

घनाक्षरी

खायो कालकूट भयो अजर अमर तन भवन मशान गथ गाठरी गरद की। डमरु कपाल कर भूषण कराल ब्याल बावरे बड़ेकी रीझ बाहन बरद की। तुलसी बिशाल गोर गात बिलसत भूति मनों हिमगिरि चारु चांदनी शरद की। अर्थ धर्म काम मोक्ष बसत बिलोकनि में काशी करामाति योगी जागति मरद की १५२ पिङ्गल जटा कलाप माथे पै पुनीत आप पावक नैना प्रताप भ्रूपर बरत हैं। लोचन बिशाललाल सोहै बालचन्द्रभाल कराठ कालकूट ब्याल भूषण धरतहैं॥ देत न अघात रीझि खात पात आकहीके भोलानाथ योगी जब औढरढरतहैं। सुन्दर दिगम्बर बिभूति

गात भांग खात रूरे शृङ्गीपूरे काल कंटक हरत हैं १५३ देत सम्पदा समेत श्रीनिकेत याचकानि भवनबिभूति भांग बृषभ बहनुहै। नाम बामदेव दाहिनो सदा असंग रंग अरधङ्ग अंगना अनंगको महनु है। तुलसी महेशको प्रभाव भावही सुगम अगम निगमहूको जानिबो गहनुहै। भेष तो भिखारी को भयङ्कर हैं शंकर दयालु दीनबन्धु दानी दारिद दहनु है १५४ चाहै न अनङ्गआरि एको अङ्ग मांगने को देबोइपै जानिये सुभाव सिद्धिबानिसो। बारिबुन्द चारि त्रिपुरारि पर डारिये तौ देत फलचारि लेत सेवा सांची मानिसो॥ तुलसी भरोसो न भवेश भोलानाथको तो कोटिक कलेश करो मरो छार छानिसो। दारिद दवन दुख दोष दाह दावानल दुनी न दयालु दूजो दानि शूलपानिसो १५५ काहेको अनेकदेव सेवत जागै मशान खोवत अपान शठ होत हठि प्रेतरे। काहेको कोटी उपाय करत मरत धाय याचत नरेश देश देश के अचेतरे॥ तुलसी प्रतीति बिनु त्यागे तो प्रयाग तनु धनही के हेतु दान देत कुरुखेतरे। पातद्वै धतूरके हैं भोरेकै भवेशसों सुरेशहीकी सम्पदा सुभाय सो न लेतरे १५६ संघटगयंद बाजिराज भले भले भट धनधाम निकर करनिहूं न पूजैकै। बनिता बिनीत पूत पावन सोहावन औ बिनय

बिबेक बिद्या सुभग शरीरवै ॥ इहां ऐसो सुख परलोक शिव लोक ओक ताको फल तुलसी सो सुनो सावधान है। जाने बिनु जानेकै रिसाने केलि कबहुँक शिवहि चढ़ाये हैहै बेल के पतौआ द्वै १५७ रतिसी रवनि सिंधु मेखला अवनि-पति औनिप अनेक ठाढ़े हाथ जोरि हारिकै। सम्पदा समाज देखि लाज सुरराजहूके सुख सब बिधि बिधि दीन्हे हैं सँवारिकै ॥ इहां ऐसो सुख सुरलोक सुरनाथपद ताको फल तुलसी सो कहैगो बिचारिकै। आकके पतौआ चारि फूलहू धतूरे के द्वै दीन्हे है हैं बारक पुरारि पर डारिकै १५८ देव-सरि सेवों बामदेव गांव रावरेही नाम रामही के मांगि उदर भरतहौं। दीबेयोग तुलसी न लेत काहूको कछुक लिखी न भलाई भाल पोच न करतहौं ॥ येतेहूँ पर कोऊ जो रावरोहै जोर करै ताको जोर देवदीन द्वारे गुदरतहौं। पाइकै उराहनो उराहनो न दीजै मोहिं कालिहकाला काशीनाथ कहे निबरत हौं १५९ चेरो राम रायको सुयश सुनि तेरो हर पांय तर आयरह्यौं सुरसरि तीरहौं। बामदेव रामको स्वभावशील जानि-यत नातो नेह जानि जिय रघुबीर भीरहौं ॥ अधिभूत बेदन बिषम होत भूतनाथ तुलसी बिकल पाहि पचत कुपीरहौं ॥ मारिये तौ अनायास काशीबास खासफल ज्याइये तौ कृपा

करि निरुज शरीरहौं १६० जीवे की न लालसा दयालु महादेव मोहिं मालुमहै तोको मरबेई को रहतहौं। कामरिपु रामके गुलामनको कामतरु अवलम्ब जगदम्ब सहित चहत हौं॥ रोगभयो भूतसो कुसूत भयो तुलसी को भूतनाथ पाहि पदपंकज गहतहौं। ज्याइये तो जानकी जीवन जन जानिजिय मारियेतो मांगी मीच सुधि ये कहतहौं १६१ भूत भव भवति पिशाच दूत प्रेत प्रिय आपनो समाज शिव आपु नीके जानिये। नानाबेष बाहन बिभूषण बसन बास खान-पान बलि पूजा बिधिको बखानिये॥ रामके गुलामन की रीतिप्रीति सूधी सब सबसों सनेह सबही को सनमानिये। तुलसी की सुधरै सुधारे भूतनाथही के मेरे माय बाप गुरु शंकर भवानिये १६२ गौरिनाथ भोलानाथ भवत भवानी-नाथ विश्वनाथपुर फिरि आन कलिकाल की। शंकरसे नर गिरिजा सी नारी काशी बासी बेद कही सही शशिशेखर कृपाल की॥ छमुख गणेशते महेशते पियारे लोग बिकल बिलोकियत नगरी बिहाल की। पुरी सुरबेलिकेलि काटत किरातकलि निठुर निहारिये उघारि डीठि भाल की १६३ ठाकुर महेश ठकुराइनि उमासी जहां लोक बेदहू बिदित महिमा ठहरकी। भट रुद्रगण पूत गणपति सेनापति कलि-

काल की कुचाल काहू तौ न हरकी ॥ बसी बिश्वनाथ की बिषाद बड़ो बाराणसी बूझिये न ऐसी गति शंकर शहर की। कैसे कहै तुलसी बृषासुरके वरदानि बानि जानि सुधा तजि पियनिजहरकी १६४ लोक बेदहू बिदित बाराणसी की बड़ाई बासी नरनारी ईश अंबिका सरूपहैं। कालनाथ कोतवाल दंडकारी दंडपाणि सभासद गणप से अमित अनूपहैं ॥ तहउँ कुचाल कलिकाल की कुरीति कैधौं जानत न मूढ़ इहां भूतनाथ भूपहैं। फलै फूलै फैलै खल सीदैं साधु पल पल बाती दीपमालिका ठठाइयत सूप हैं १६५ पंचकोश पुण्यकोश स्वारथ परारथको जानि आपु आपने सुपास बास दियो है। नीच नरनारि न सँभारिसके आदर लहत फल कादर बिचारि जो न कियो है। बारी बाराणसी बिनु कहे चक्र चक्रपाणि मानि हितहानिसो मुरारि मनभियो है। रोष में भरोसो एक आशुतोष कहिजात बिकल बिलोकि लोक कालकूट पियो है १६६ रचत बिरंचि हरि पालत हरत हर तेरेहि प्रसाद जग अगजगपालिके। तोहिं में बिकास बिश्व तोहिंमें बिलास सब तोहिं में समातु मातु भूमिधर बालिके। दीजै अवलंब जगदंब न बिलंब कीजै करुणा तरंगिनी कृपा तरंग मालिके। रोष महामारी परितोष मह

तारी दुनि देखिये दुखारी मुनि मानस मरालिके १६७
निपट बसेरे अघ औगुण घनेरे नर नारिउ अनेरे जगदंब
चेरी चेरे हैं। दारिद दुखारी देखि भूसुर भिखारी भीरु लोभ
मोह काम कोह कलिमल घेरे हैं। लोकरीति राखी राम-
साखी बामदेव जानि जनकी बिनती मानि मातुकहि मेरे हैं।
महामारी महेशानी महिमा की खानी मोद मंगलकी राशी
काशी बासी दास तेरे हैं १६८ लोगनको पापकैधौं सिद्ध
सुरशाप कैधौं काल के प्रताप काशी तिहूं ताप तई है। ऊंचे
नीचे बीच के धनिक रंक राजा राय हटनि बजाइकरि डीठि
पीठि दई है॥ देवता निहोरे महामारीन्ह सों करजोरे भोरा-
नाथ जानी भोरे आपनीसी ठई है। करुणानिधान हनुमान
बीर बलवान यशराशि जहांतहां तैंही लूटिलई है १६९
शंकर शहर सर नारिनर बारिचर बिकल औ महामारि महा-
मांज भई है। उछरत उतरात हहरात मरिजात भभरि
भगात जलथल मीचमई है। देव न दयाल महिपाल न
कृपाल चित बाराणसी बाढ़त अनीति नितनई है। पाहि
रघुराज पाहि कपिराज रामदूत रामहू कि बिगरी तैंहीं सुधारि
लई है १७० एक तो कराल कलिकाल शूल मूल तामें
कोढ़में की खाजसी शनीचरी है मीनकी। बेदधर्म दूरिगये

भूमिचोर भूप भये साधु सिद्ध मानजान बीये पापपीनकी ॥ दूबरेको दूसरो न द्वार राम दयाधाम रावरेई गति बलि बिभव बिहीन की। लागैगी पैलाज वा बिराजमान बिरदहि महाराज आज जो न देत दाद दीन की १७१ राम नाम मातपितु स्वामी समरथ हितु आश रामनामकी भरोसो राम नाम को। प्रेम राम नामहीसों नेम रामनामही को जानों न मरम पग दाहिनो न बामको ॥ स्वारथ सकल परमारथको राम नाम रामनामहीन, तुलसी न काहूकाम को। रामकी शपथ सरबसु मेरे रामनाम कामधेनु कामतरु मोसे छीण-छामको १७२

सवैया

मारग मारि महीसुर मारि कुमारग कोटिककै धन लीयो।
शङ्कर कोपसों पापको दाम परीक्षित जाहिगो जारिकै हीयो॥
काशी में कंटक जेते भये ते गेपाइ अघाइकै आपनो कीयो।
आजुकि काल परौं कि नरौं जड़जाहिंगे चाटि देवारी को दीयो १७३
कुंकुम अङ्गसों रंगजितो मुखचन्द कि चन्दसों होड़परी है।
बोलत बोल समृद्धिचुवै अवलोकत शोच बिषादहरी है॥
गौरीको गङ्ग बिहङ्गनिबेष कि मंजुल मूरति मोद भरी है।
पेखि सप्रेम पयानसमै सब शोच बिमोचन क्षेमकरी है १७४

घनाक्षरी

मंगल की राशि परमारथ की खानि जानि बिरची बनाइ बिधि केशव बसाई है। प्रलयहू काल राखी शूलपाणि शूलपर मीचबश नीच सोउ चाहत खसाई है॥ छांड़ि क्षितिपाल जो परीक्षित भये कृपाल भलो कियो खल को निकाई सो नशाई है। पाहि हनुमान करुणानिधान राम पाहि काशी कामधेनु कलिकुहत कसाई है १७५ बिरची बिरञ्चि की बसत बिश्वनाथकी जो प्राणहूँते प्यारी पुरी केशव कृपाल की। ज्योतिरूप लिङ्गमयी अगणित लिङ्ग-मयी मोक्ष बितरनि बिदरनि जगजाल की॥ देबी देव देवसरि सिद्ध मुनिबर बास लोपति बिलोकत कुलिपि भोंड़े भाल की। हाहाकरै तुलसी दयानिधान राम ऐसी काशी की कदर्थना कराल कलिकाल की १७६ आश्रम बरण कलि बिबश बिकल भये निज निज मरयाद मोटरीसी डारदी। शङ्कर सरोष महा मारिहिते जानियत साहिब सरोष दुनी दिन दिन दारदी॥ नारि नर आरत पुकारत सुनै न कोऊ काहू देवतानि मिलि मोटी मुठी मारदी। तुलसी

सभीत पाल सुमिरे कृपाल राम समय सुकरुणा सराहि सनकारदी १७७

इति श्रीगोसाईंतुलसीदासकृत कवितावली रामायण समाप्त

बुकडिपो की कुछ धार्मिक पुस्तकें:—

भगवद्गीता पं० सूर्यदीनकृत भाषानुवाद सजिल्द	१।)
भगवद्गीता सरल अनुवाद और टिप्पणी श्रीगिरिजा-प्रसाद द्विवेदी	।।।)
भगवद्गीता भाषा टीका बाबू हरिराम भार्गव	२।।)
ईश्वरभक्ति म० म० श्रीदुर्गाप्रसाद द्विवेदी	=)
मनुस्मृति श्रीगिरिजाप्रसाद द्विवेदी	२।)
भगवद्गीता भाषा टीका बाबू ज़ालिमसिंह	२।)
भगवद्गीता आनन्दगिरि	३।)
भगवद्गीता भाषा बाबू हरिराम भार्गव	१)
पारसभाग	४)
बीजक कबीरदास	२।)
भक्तमाल सटीक कलां	४।)
भक्तमाल नाभाजी	२)
योगवाशिष्ठ कामिल	६।।)
गरुड़पुराण भाषा टीका	१।।=)
स्कंदमहापुराण (सम्पूर्ण) ग्लेज़	४०)
प्रेमसागर	२।)

अन्य पुस्तकों के लिए कार्ड डालकर बड़ा सूचीपत्र मँगाइए।

मैनेजर—नवलकिशोर-प्रेस, बुकडिपो, लखनऊ.

Printed by B. B. Kapur, at the N. K. Press, Lucknow, 1944